

Manuscript

विधिवत धर्मविज्ञान क्या है

विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 1

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्‍त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकार्इ के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

[परिचय 1](#_Toc80705709)

[नया नियम 1](#_Toc80705710)

[विधिवत धर्मविज्ञान 2](#_Toc80705711)

[बाइबल पर आधारित 3](#_Toc80705712)

[तर्क पर आधारित 3](#_Toc80705713)

[परंपरा पर आधारित 4](#_Toc80705714)

[नए नियम का धर्मविज्ञान 5](#_Toc80705715)

[विविधता 5](#_Toc80705716)

[पास्तरीय चरित्र 6](#_Toc80705717)

[शैलियाँ 7](#_Toc80705718)

[आधारभूत ढाँचा 7](#_Toc80705719)

[ऐतिहासिक घटनाक्रम 8](#_Toc80705720)

[धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान 9](#_Toc80705721)

[सांस्कृतिक परिवर्तन 10](#_Toc80705722)

[धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन 11](#_Toc80705723)

[मध्य-कालीन धर्मविज्ञान 14](#_Toc80705724)

[सांस्कृतिक परिवर्तन 14](#_Toc80705725)

[धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन 14](#_Toc80705726)

[प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान 19](#_Toc80705727)

[आरंभिक धर्मसुधारक 19](#_Toc80705728)

[शास्त्रीय अंगीकार 21](#_Toc80705729)

[आधुनिक विधिवत प्रक्रियाएँ 22](#_Toc80705730)

[मूल्य और खतरे 23](#_Toc80705731)

[मसीही जीवन 24](#_Toc80705732)

[वृद्धि 24](#_Toc80705733)

[रूकावट 25](#_Toc80705734)

[समुदाय में सहभागिता 26](#_Toc80705735)

[वृद्धि 26](#_Toc80705736)

[रूकावट 27](#_Toc80705737)

[पवित्रशास्त्र की व्याख्या 27](#_Toc80705738)

[वृद्धि 28](#_Toc80705739)

[रूकावट 29](#_Toc80705740)

[उपसंहार 29](#_Toc80705741)

परिचय

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो कि एक गन्दे कमरे में बिलकुल भी खड़ा नहीं हो सकता? कॉलेज में मेरा एक साथी था जो ऐसा ही था। जब मैं कक्षा में जाता था तो मैं अक्सर अपनी मेज को गन्दा छोड़ देता था, परंतु वह मेरे पीछे से इसे अक्सर साफ कर दिया करता था। मैं अगले दिन फिर से चीजों को यों ही अस्त-व्यस्त छोड़ देता था और वह फिर से इन्हें साफ कर दिया करता था। एक दिन जब मैं हमारे कमरे से बाहर की ओर जा रहा था तो उसने मुझे रोका और कहा, “तुम्हारी परेशानी क्या है? क्या तुम्हें नहीं पता कि कैसे चीजों को अपनी जगह पर रखना चाहिए?”

001

जी हाँ, मैंने उसके सामने स्वीकार किया, “मुझे पता है कि कैसे चीजों को अपनी जगह पर रखना चाहिए परंतु मेरे पास करने के लिए और भी बहुत से कार्य हैं जिसके कारण मुझे उन्हें रखने का समय नहीं मिलता।”

002

मुझे अभी भी उसका उत्तर याद है : “यदि आप कुछ समय निकाल कर चीजों को अपनी जगह पर रख दें, तो स्वयं चकित रह जाओगे कि और कितने काम आप कर सकते हो।”

003

कई रूपों में मेरे मित्र का विचार मसीही धर्मविज्ञान पर भी लागू होता है। बहुत से ऐसे मसीही विश्वासी हैं जो यह सोचते हैं कि मसीह के लिए बहुत कुछ करना अभी बाकी है इसलिए अपने धर्मविज्ञान को सही करने का समय ही नहीं बचता है। खोए हुओं को जीतना, कलीसियाओं की स्थापना, पवित्रशास्त्र का शिक्षण...जैसी बहुत सी बातें करने के लिए हैं। परंतु वास्तविकता तो यह है कि यदि हम अपने धर्मविज्ञान को विधिवत तरीके से करने के लिए समय निकालते हुए इसे व्यवस्थित करें, तो हम वास्तव में मसीह और उसके राज्य के लिए बहुत अधिक सेवकाई करने योग्य हो जाएंगे।

004

यह विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना की हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम विधिवत धर्मविज्ञान जो कि सुव्यवस्थित और व्यवस्थित या “क्रमबद्ध धर्मविज्ञान” के नामों से भी जाना जाता है, की खोज करेंगे। विधिवत धर्मविज्ञान उन कई तरीकों में से एक है जिसमें पवित्र आत्मा ने मसीही कलीसिया का मार्गदर्शन उसके धर्मविज्ञान को विधिवत या व्यवस्थित तरीके से रखने में किया है। हमने इस अध्याय का शीर्षक, “विधिवत धर्मविज्ञान क्या है,” दिया है। इस परिचयात्मक अध्याय में हम विधिवत धर्मविज्ञान के अध्ययन से संबंधित कई मूलभूत विषयों की खोज करेंगे।

005

हमारा यह अध्याय तीन मुख्य विषयों को स्पर्श करेगा : सर्वप्रथम, हम नए नियम के धर्मविज्ञान की तुलना विधिवत धर्मविज्ञान से करेंगे। वे कैसे एक दूसरे के समान और भिन्न हैं? दूसरा, हम इसके ऐतिहासिक घटनाक्रमों को देखेंगे जिसके फलस्वरूप विधिवत धर्मविज्ञान आया है। यह कहाँ से आया है? और तीसरा, हम विधिवत धर्मविज्ञान के मूल्यों और खतरों को देखेंगे। इस अध्ययन के क्या लाभ और नुकसान हैं? आइए नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच के संबंध की खोज करते हुए आरंभ करें।

006

नया नियम

नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच के संबंध से आरंभ करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि मसीह के अनुयायी होने के नाते हम पवित्रशास्त्र के निर्विवाद अधिकार के प्रति प्रतिबद्ध हैं, न कि धर्मविज्ञान की किसी अन्य पद्धति के प्रति, चाहे वह कितनी भी अच्छी क्यों न हो। बाइबल को छोड़ कर धर्मविज्ञान की कोई भी अन्य पद्धति पापी मनुष्यों की त्रुटियों को ही प्रतिबिम्बित करती है। इसलिए, आरंभ से ही हमारी रूचि इस बात में होनी चाहिए कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान बाइबल से तुलना करता है। वे कौनसे रूप हैं जिनमें यह पवित्रशास्त्र के जैसा है? यह किन रूपों में भिन्न है?

007

नए नियम के धर्मविज्ञान और विधिवत धर्मविज्ञान के बीच के संबंध को देखने के लिए हम पहले दो विषयों को स्पर्श करेंगे, पहला विधिवत धर्मविज्ञान की रूपरेखा और दूसरा नए नियम के धर्मविज्ञान की रूपरेखा। आइए सबसे पहले विधिवत धर्मविज्ञान की रूपरेखा को देखें।

008

विधिवत धर्मविज्ञान

ऐतिहासिक तौर पर कहें तो विधिवत धर्मविज्ञान उन सबसे अधिक प्रभावशील तरीकों में से एक तरीका है जिसमें मसीहियों ने धर्मविज्ञान का निर्माण किया है। सच्चाई तो यह है कि संसार के किसी भी कोने में एक ऐसे मसीही अनुयायी को पाया जाना कठिन होगा जो विधिवत धर्मविज्ञान से प्रभावित न हुआ हो। जब हम परमेश्वर को त्रिएक परमेश्वर के रूप में कहते हैं, अर्थात् परमेश्वर तीन व्यक्तित्वों में पाया जाता है जिनका तत्व एक जैसा है, तो हम विधिवत धर्मविज्ञानियों के किए हुए कार्य पर निर्भर होते हैं; जब हम एक व्यक्तित्व के रूप में मसीह के बारे में बात करते हैं जो पूर्ण र्ईश्वर और पूर्ण मनुष्य है, तो हम ऐसे सिद्धांतों पर कार्य करते हैं जिनकी व्याख्या विधिवत धर्मविज्ञान में की जाती हैं। जब हम नए जीवन, विश्वास, पश्चाताप, पवित्रीकरण, और महिमान्वित किए जाने जैसे शब्दों का उपयोग करते हैं, तो हम ऐसे शब्दों का उपयोग कर रहे हैं जिन्हें हमारे लिए विधिवत धर्मविज्ञानियों के द्वारा परिभाषित किया गया है। तौभी, चाहे विधिवत धर्मविज्ञान कितना भी ज्यादा प्रभावशील क्यों न हो, अधिकांश मसीही विश्वासियों में आज इसके प्रति अस्पष्ट विचार है कि यह क्या है।

009

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं कि धर्मविज्ञानियों ने धर्मविज्ञान की इस पद्धति को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया है। परंतु हम एक परिभाषा को देखते हुए पारंपरिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान के केन्द्रीय विचार के बारे में जान सकते हैं जो कि लुईस ब्रकोफ़ की जानी-पहचानी पुस्तक विधिवत धर्मविज्ञान से आती है, जिसे उसने बीसवीं सदी के मध्य में लिखा था।

010

अपनी पुस्तक के चौथे अध्याय में, ब्रकोफ़ ने अपने अध्ययन की परिभाषा इस तरह से दी है :

011

 विधिवत धर्मविज्ञान मसीही धर्म के सभी सैद्धांतिक सत्यों का विधिवत प्रस्तुतीकरण देने का प्रयास करता है।

012

012

सरल रूप से कही गई यह परिभाषा विधिवत धर्मविज्ञान के तीन पहलुओं पर प्रकाश डालती है : पहला, यह स्वयं को “सत्य” के साथ जोड़ती है। दूसरा, यह सत्य को एक “विधिवत” पद्धति में विभिन्न सत्यों के बीच स्थापित तार्किक संबंधों के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। और तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञान “मसीहियत” के संदर्भ के भीतर निर्मित होता है।

013

ब्रकोफ़ की परिभाषा के ये तत्व हमारे विचार विमर्श का तीन दिशाओं में मार्गदर्शन करेंगे : पहला, हम इस तथ्य की ओर देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में प्रस्तुत सत्यों का अनुसरण करने के द्वारा बाइबल पर आधारित बने रहने का प्रयास करता है। दूसरा, हम यह देखेंगे कि विधिवत धर्मविज्ञान तार्किक रूप से सुसंगत एक ऐसी पद्धति का निर्माण करता है जिसमें बाइबल पर आधारित प्रत्येक सत्य को अन्यों के साथ संबंध में समझा जा सकता है। और तीसरा, हम उन तरीकों के पर विचार करेंगे जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान पारंपरिक धर्मवैज्ञानिक तथ्यों और प्राथमिकताओं का अनुसरण करता है। सबसे पहले इस सच्चाई पर विचार करें कि विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल पर आधारित होना चाहिए।

014

बाइबल पर आधारित

 ब्रकोफ़ विधिवत धर्मविज्ञान की बाइबल पर निर्भरता के विषय में कहते हैं, जब वे यह कहते हैं कि विधिवत विज्ञान का संबंध “सैद्धांतिक सत्यों” से है। क्योंकि प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्री सोला स्क्रिप्चरा अर्थात् केवल पवित्रशास्त्र के प्रति प्रतिबद्ध हैं, इसलिए यह कहना कि हमारा ध्यान सैद्धांतिक सत्यों पर केन्द्रित है का अर्थ यह है कि हमारे संपूर्ण धर्मविज्ञान को बाइबल के अनुसार ही होना चाहिए। और वास्तव में हम अपने अधिकांश विधिवत सिद्धांतों को सीधे बाइबल से ही लेते हैं। ब्रकोफ़ ने अपने विधिवत धर्मविज्ञान में इस टिप्पणी के साथ इस बिन्दु को पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया है:

015

015

 विधिवत-शास्त्रियों को यह दर्शाना अवश्य है कि विधिवत धर्मविज्ञान अपनी जड़ को पवित्रशास्त्र की भूमि की गहराई में रोपित करता है।

016

016

दुर्भाग्य से, मसीहियों ने सदैव विधिवत धर्मविज्ञान के विषय में इस तरह से नहीं सोचा है। बाइबल आधारित शिक्षाओं में विधिवत रूप को मजबूत करने के स्थान पर धर्मविज्ञानी कम से कम तीन मूलभूत दिशाओं की ओर चले गए हैं। कुछ धर्मविज्ञानियों ने यह देखा है कि विधिवत धर्मविज्ञान सामान्य रूप से कलीसियाई परंपरा या धर्मशिक्षा में निहित है। वे इसे केवल अभी तक के कलीसियाई इतिहास की शिक्षाओं के सावधानी से किए हुए विश्लेषण के रूप में देखते हैं। अन्य धर्मविज्ञानियों ने विधिवत धर्मविज्ञान को मुख्य रूप से धार्मिक अनुभव में निहित होने में देखा है; ये धर्मविज्ञानी मनुष्यों की धार्मिक कल्पनाओं और आत्मबोधों को विधिवत रूप में लाना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त और भी अन्य धर्मविज्ञानियों ने मसीही विश्वास से दूर उन दर्शनशास्त्रीय विचारों की ओर उस भूमि के रूप में देखा है जिसपर विधिवत धर्मविज्ञान का विकास हुआ है। फलस्वरूप, इन धर्मविज्ञानियों ने विधिवत धर्मविज्ञान को धर्म के दर्शनशास्त्र में परिवर्तित कर दिया है।

017

अब, प्रत्येक व्यक्ति जो विधिवत धर्मविज्ञान में कार्यरत् है वह कलीसियाई परंपरा, धार्मिक अनुभव, और दर्शनशास्त्रीय अवधारणाओं को कुछ सीमा तक सम्मिलित करता है। परंतु हमारे इन अध्यायों में, हम शुद्ध विधिवत धर्मविज्ञान को एक ऐसे अनुशासन के रूप में परिभाषित करेंगे जो कि अंतत: पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं में निहित है। हम अपने विधिवत धर्मविज्ञान को कलीसियाई परंपरा, धार्मिक अनुभव या दर्शनशास्त्र पर आधारित करने की खोज नहीं कर रहे हैं। स्वयं मसीह के जैसे हम समझते हैं कि सारा अच्छा धर्मविज्ञान, जिसमें विधिवत धर्मविज्ञान भी सम्मिलित है, को बाइबल आधारित ही होना चाहिए।

018

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि विधिवत धर्मविज्ञान को बाइबल पर आधारित होने का प्रयास करना चाहिए, इसलिए हमें विधिवत धर्मविज्ञान के तार्किक रूप से सुंसगत होने, अर्थात् पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को विधिवत रूप में व्यवस्थित करने के प्रयास पर ध्यान देना चाहिए।

019

तर्क पर आधारित

 जैसे कि ब्रकोफ़ की परिभाषा इंगित करती है कि, यह अध्ययन “सभी सैद्धांतिक सत्यों का विधिवत प्रस्तुतीकरण देने का प्रयास” करता है। या, जैसे कि उसने किसी और जगह विस्तार से कहा :

020

020

 विधिवत-शास्त्री सैद्धांतिक सत्यों को एक विधिवत संपूर्णता में जोड़ने का प्रयास करता है।

021

021

इस दृष्टिकोण में, एक विधिवत धर्मविज्ञानी का कार्य मसीही मान्यताओं का सार निकालने का है ताकि वह एक व्यापक, व्यवस्थित, यहाँ तक की तर्कसंगत व्यवस्था का निर्माण करे। विधिवत-शास्त्री यह स्पष्ट करने की कोशिश करते हैं कि कैसे पवित्रशास्त्र की शिक्षाएँ मान्यताओं की एक एकीकृत तार्किक व्यवस्था को प्रकट करती हैं।

022

प्रत्येक युग में, बहुत से मसीही विश्वासी अपनी मान्यताओं को अपेक्षाकृत असंगत रूप में छोड़ देने में संतुष्ट रहे हैं। हम परमेश्वर के बारे में कुछ बातों पर विश्वास करते हैं। हम विश्वास और उद्धार के बारे में अन्य बातों में विश्वास करते हैं। हमारे पास नैतिकता और सदाचार के बारे में अन्य मान्यताएँ हैं। यद्यपि अधिकांश मसीही विश्वासी बहुत सी बातों पर विश्वास करते हैं, फिर भी हम अक्सर अपनी मान्यताओं को एक दूसरे से अलग रहने देते हैं।

023

इसके विपरीत, विधिवत धर्मविज्ञान मसीही मान्यताओं की सुंसगति को उच्च शिखर पर रखते हुए प्रदर्शित करता है। विधिवत-शास्त्री जो कुछ पवित्रशास्त्र सिखाता है उसके छोटे छोटे हिस्सों को लेते हैं और जितना संभव हो सके उसके सुसंगत और व्यापक रूप में उनके आपस के तार्किक संबंधों को सिखाने और स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। वास्तव में, इसलिए ही इस अनुशासन को विधिवत धर्मविज्ञान कहा जाता है। लक्ष्य यहाँ बाइबल द्वारा सिखाई गई धर्मविज्ञान कीपद्धति को प्रकट करना है।

024

तीसरा, विधिवत धर्मविज्ञान न केवल बाइबल पर आधारित और तार्किक रूप से स्पष्ट होने का प्रयास करता है, बल्कि पारंपरिक मसीही विश्वास के साथ सुसंगति बनाए रखने का भी। ऐसा करने में यह उन सिद्धांतों पर ध्यान लगाता है जिन्हें इतिहास ने कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण होने के रूप दिखाया है।

025

परंपरा पर आधारित

ब्रकोफ़ की परिभाषा ने यह कहते हुए इस विषय को संबोधित किया कि विधिवत धर्मविज्ञान सैद्धांतिक सत्यों के साथ “मसीही धर्म” के रूप में व्यवहार करता है।

026

अपनी परिभाषा के इस पहलू पर उसने इसे इस तरह से विस्तारपूर्वक बताया है :

027

[विधिवत-शास्त्री]... इस अवधारणा पर कार्य नहीं करेगा कि अतीत के सैद्धांतिक विकास एक बहुत बड़ी त्रुटि थे, और इसलिए उसे अपने कार्य को बिलकुल आरंभ या पूर्ण रूप से नए तरीके से करना चाहिए।

028

028

विधिवत धर्मविज्ञान में हम मसीही धर्म के संदर्भ में, पारंपरिक धर्मविज्ञानीय महत्व और प्राथमिकताओं के संदर्भ में, धर्मसिद्धांतों को देखने की कोशिश करते हैं। इसलिए विधिवत धर्मविज्ञान न केवल बाइबल के साथ आदान प्रदान करना है बल्कि उन मुख्य तरीकों के साथ भी जिनमें बाइबल की शिक्षाओं को अभी तक के कलीसियाई इतिहास में धर्मविज्ञानियों द्वारा व्यक्त किया गया है।

029

पारंपरिक महत्व के साथ ये दृष्टिकोण यह व्याख्या करता है कि क्यों लगभग प्रत्येक विश्वनीय प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान एक ही जैसे मूलभूत ढाँचे का अनुसरण करता है। धर्मविज्ञानीय चिन्तनों के केन्द्रीय विचारों का अनुसरण करते हुए जो कि कई सदियों में विकसित हुए हैं, विधिवत-धर्मशास्त्री अक्सर पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों को इस तरीके से संगठित करते हैं। वे या तो बाइबल-विज्ञान, जो कि पवित्रशास्त्र का सिद्धांत है, या फिर ईश-विज्ञान या उचित धर्मविज्ञान, जो कि परमेश्वर का सिद्धांत है, के साथ आरंभ करते हैं। फिर वे मानव-विज्ञान की ओर मुड़ते हैं, जो कि मनुष्य का सिद्धांत है, और विशेषकर मनुष्य की उद्धार की आवश्यकता पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। फिर वे उद्धार-विज्ञान का उल्लेख करते हैं, जो कि उद्धार का सिद्धांत है। इसके बाद, वे कलीसियाई-विज्ञान, जो कि कलीसिया का सिद्धांत है और अंत में, युगांतविज्ञान, जो कि अंतिम बातों का सिद्धांत है उसका उल्लेख करते हैं। मूल क्रम विधिवत धर्मविज्ञान की विशेषताएं हैं क्योंकि विधिवत-धर्मशास्त्री अपनी इन प्राथमिकताओं को पारंपरिक मसीही धर्मविज्ञान की रूपरेखा से प्राप्त करते है।

030

इस तरह से, हम कम से कम विधिवत धर्मविज्ञान की तीन मूलभूत विशेषताओं को देख सकते हैं। शुद्ध प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मवैज्ञानी एक ऐसे धर्मविज्ञान की रचना करने की कोशिश करते हैं कि जो बाइबल-आधारित, तार्किक रूप से सुसंगत और अपने महत्वों और प्राथमिकताओं में पारंपरिक हो।

031

अब क्योंकि हमने विधिवत धर्मविज्ञान की रूपरेखा को तैयार कर लिया है, इसलिए हमें अपने अगले विषय : नए नियम के धर्मविज्ञान की पद्धतियों की ओर मुड़ना चाहिए।

032

नए नियम का धर्मविज्ञान

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अच्छे विधिवत-धर्मशास्त्री पुराने नियम को सम्मिलित करते हुए पूरी बाइबल पर अपना ध्यान देते हैं, परंतु इस अध्याय में, हम स्वयं को विधिवत धर्मविज्ञान और नए नियम के धर्मविज्ञान के मध्य की तुलना तक ही सीमित रखेंगे।

033

कई तरह से, जैसे ब्रकोफ़ ने सुझाव दिया है, विधिवत धर्मविज्ञान को नए नियम में रोपित एक वृक्ष के रूप सोचना उचित है। पहले स्थान पर यह रूपक सहायतापूर्ण है क्योंकि यह हमें स्मरण दिलाता है कि विधिवत धर्मविज्ञान अपने जीवन को पवित्रशास्त्र से पोषित करता है। शुद्ध विधिवत-धर्मशास्त्री अपने कथनों को जितना ज्यादा सम्भव हो सके उतना नए नियम के कथनों के अनुरूप बनाने की कोशिश करते हैं। इस भाव में, अच्छा विधिवत धर्मविज्ञान बहुत कुछ नए नियम के धर्मविज्ञान की तरह ही होता है।

034

परंतु दूसरे स्थान पर, बहुत कुछ एक वृक्ष की तरह, विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र की भूमि से बहुत आगे और दूर तक फैला हुआ होता है। कहने का अर्थ यह है कि यद्यपि विधिवत धर्मविज्ञान नए नियम में से ही विकसित हुआ है, परंतु यह नए नियम से बहुत अधिक भिन्न सीमा में विकसित हुआ है।

035

इन भिन्नताओं को देखने के लिए हम नए नियम के धर्मविज्ञान की चार विशेषताओं को स्पर्श करेंगे जो कि विधिवत धर्मविज्ञान से इसे अलग करती हैं : सर्वप्रथम, नए नियम के धर्मविज्ञान की संबंधात्मक विविधता; दूसरा नए नियम का पास्तरीय चरित्र; तीसरा, वे शैलियाँ जिनका उपयोग नए नियम के धर्मविज्ञान को व्यक्त करने के लिए किया गया है; और चौथा, नए नियम का आधारभूत ढाँचा। आइए उन विविध शब्दावलियों और श्रेणियों को देखते हुए आरंभ करें जिन्हें हम नए नियम में पाते हैं।

036

विविधता

जैसा कि हमने देखा है, विधिवत धर्मविज्ञान उन विषयों के चारों ओर निर्मित हुआ है जिन पर कलीसिया के इतिहास में बार-बार विचार विमर्श किया गया है। इस लंबे इतिहास ने शब्दों और श्रेणियों की अपेक्षाकृत एकीकृत सूची को निर्मित किया है जिसका अनुसरण सभी विधिवत-धर्मशास्त्री निरंतर करने की प्रवृति रखते हैं। निश्चित होने के लिए, विभिन्न विधिवत धर्मविज्ञानी स्वयं को भिन्न तरीकों से व्यक्त करते हैं; वे कठोरता से एक ही विचार का पालन नहीं करते। परंतु विधिवत धर्मविज्ञान अपने आप में पूरी तरह से उच्च स्तरीय रूप में मानकीकृत है ताकि शब्द और श्रेणियाँ एक ही तरीके से उपयोग की जाएं।

037

नया नियम इस तरह की व्यापक एकरूपता को नहीं दर्शाता है। नए नियम के शब्दों और श्रेणियों में विधिवत धर्मविज्ञान की अपेक्षा बहुत ज्यादा विविधता है। अब, हमें यहाँ पर सचेत रहना चाहिए कि कहीं हम विषय को बढ़ा-चढ़ा कर न कह दें। बहुत से केन्द्रीय और मूलभूत मसीही विषयों पर नए नियम के लेखकों ने एक जैसी ही शब्दावली के भंडार, अवधारणाओं और विचारों के ढाँचे को साझा किया है। ऐसा नहीं है कि मानो नए नियम का धर्मविज्ञान इतना ज्यादा द्रव्य था कि उसमें बिलकुल भी एकरूपता नहीं थी।

038

उदाहरण के लिए, उन सब ने पुराने नियम की शिक्षाओं से परमेश्वर का एक जैसा वर्णन किया। उन सभों ने यह शिक्षा दी है यीशु ही ख्रिस्त या मसीह है और इसके अर्थ के प्रति कई पेचीदा मान्यताओं को साझा किया है। वे पाप और उद्धार जैसे शब्दों के मूलभूत अर्थों के लिए आपस में सहमत थे। ऐसी मूलभूत समानताओं की सूची बहुत ही व्यापक है।

039

फिर भी, इन समानताओं के साथ साथ, यह स्पष्ट है कि नए नियम का धर्मविज्ञान बहुत अधिक विविध तरह का था। नए नियम के विभिन्न लेखकों ने उनके धर्मविज्ञान को विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया है।

040

उनकी भिन्नताओं का एक कारण सचेत जैविक या मार्मिक प्रेरणा में पाया जा सकता है। पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखकों को त्रुटि से और एक दूसरे के साथ विरोधाभासी होने से बचाया, परंतु उसे नए नियम के लेखकों की शब्दावलियों और श्रेणियों को एक जैसा ही नहीं होने दिया कि वे एक समान हो जाएं। बाइबल के प्रत्येक लेखक ने अपनी पृष्ठभूमि, अपने व्यक्तित्व, और अनुभवों के दृष्टिकोण से लिखा। फलस्वरूप, नए नियम के लेखकों ने मसीही विश्वास में संतुलन को प्रकट किया, परंतु भिन्न तरीकों से।

041

इसी कारण पौलुस के द्वारा मसीही विश्वास की व्याख्या किया जाना ठीक लूका जैसा नहीं है। यूहन्ना, मत्ती से भिन्न है। मरकुस, पतरस से भिन्न है। विधिवत धर्मविज्ञान में मापदंड वाले तरीकों से रखी हुई बातों की तुलना से, नए नियम का धर्मविज्ञान बहुत ही ज्यादा भिन्न है।

042

बहुत ज्यादा भिन्न होने के अतिरिक्त, नये नियम का धर्मविज्ञान विधिवत धर्मविज्ञान् की अपेक्षा बहुत ज्यादा पासबानी या पास्तरीय है।

043

पास्तरीय चरित्र

विधिवत धर्मविज्ञान को तार्किक रूप से सुसंगत, मसीही विश्वास की शिक्षाओं के व्यापक अर्थ के लिए निर्मित किया है। यह विशेषकर स्थाई, विश्वयापी सत्यों पर केन्द्रित होती है। और इसके फलस्वरूप, यह अक्सर ऐसी बातों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं जो कि अमूर्त, परिकल्पनीय गुण वाली होती हैं जैसे कि स्वयं परमेश्वर और प्रायश्चित के सिद्धांत, संस्कार और अन्य कई अमूर्त विषय।

044

इसके विपरीत, नए नियम का धर्मविज्ञान बहुत ही ज्यादा पास्तरीय है। नए नियम के लेखकों ने अपने धर्मविज्ञान का कई तरीकों से उल्लेख किया है जो कि विशेष तरीकों में अपेक्षाकृत विशेष आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं। एक बार फिर से, हमें सचेत रहना चाहिए कि इन बातों को बढ़ा-चढ़ा कर न कहें। नये नियम के लेखकों ने अंतकालीन, अमूर्त सत्यों को भी स्पर्श किया था। परंतु उनके अधिकतर लेखों में उन विशेष चुनौतियों का उल्लेख किया गया है जिनका उनके दिनों में भिन्न भिन्न विश्वासियों ने सामना किया था।

045

उदाहरण के लिए, पास्तरीय ध्यान यह स्पष्ट करता है कि क्यों पौलुस के पत्र एक दूसरे से इतने ज्यादा भिन्न हैं। यदि पौलुस ने विधिवत धर्मविज्ञान को लिखने की मंशा की होती तो उसने बस केवल एक ही पत्र को लिखा होता। परंतु उसके पत्रों में विषय वस्तु और महत्व नाटकीय ढंग से भिन्न हैं क्योंकि प्रत्येक पत्र भिन्न कलीसिया की भिन्न आवश्यकता को संबोधित करता है।

046

बिना किसी संदेह के, नए नियम के सभी लेखकों में धर्मविज्ञान की गहन समझ थी। परंतु जब बात नए नियम के लेखों में उनके धर्मविज्ञान को व्यक्त करने की आई, तो उन्होंने इस तरह के ऊँचे विचारों की व्याख्या करने की कोई परवाह नहीं की। इसकी अपेक्षा, उनका लक्ष्य लोगों के लिए उनकी वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में धर्मविज्ञान को लागू करने के लिए पासबानी था। इसलिए सिद्धांतों के तार्किक स्पष्टीकरण पर ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा नए नियम के लेखकों ने लोगों की वास्तविक, व्यावहारिक आवश्यकताओं, और उन तरीकों पर ध्यान केन्द्रित किया जिनमें धर्मविज्ञान ने इन आवश्यकताओं को पूरा किया। और फलस्वरूप, उनके धर्मवैज्ञानिक लेख मापदंड के रूप से विधिवत धर्मविज्ञान से बिलकुल भिन्न दिखाई दिए।

047

तीसरे स्थान पर, नए नियम का धर्मविज्ञान विधिवत धर्मविज्ञान से इसलिए भिन्न है क्योंकि नया नियम अपने धर्मविज्ञान को विभिन्न तरह की शैलियों में व्यक्त करता है। नए नियम के लेखकों ने विभिन्न तरह के कई साहित्यिक रूपों और शैलियों का उपयोग किया है।

048

शैलियाँ

विधिवत धर्मविज्ञान एक ही मूलभूत शैली से लिखा हुआ है: जिसे हम विस्तरित निबन्ध या आलेख कह सकते हैं। लगभग सब कुछ जो विधिवत धर्मविज्ञान में प्रकट होता है इस तरह की गद्य शैली में लिखा हुआ है।

049

इसके विपरीत, नए नियम का धर्मविज्ञान विभिन्न तरह की शैलियों में व्यक्त किया गया है। नए नियम में कई विभिन्न प्रकार के साहित्य प्रकट होते हैं। विशाल रूप में कहें तो इसमें साहित्य के दो मुख्य प्रकार पाए जाते हैं: कहानियाँ और पत्र। सुसमाचार और प्रेरितों के काम नामक पुस्तकें मूल रूप से कहानियाँ हैं और इसमें कोई संदेह नहीं कि बाकी का नया नियम पत्रियाँ या पत्र हैं। और नए नियम की कहानियों और पत्रियों में हम भजनों, प्रार्थनाओं, आदेशों, दोषों, पास्तरीय आग्रहों, दर्शनों, उपदेशों और साहित्य के कई अन्य प्रकारों को भी पाते हैं। ये शैलियाँ विधिवत धर्मविज्ञान में बहुत ही कम प्रकट होती हैं।

050

नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के मध्य बहुत सी भिन्नताएँ भी प्रकट होती हैं जब हम उनकी मूलभूत धर्मविज्ञानीय रूपरेखा या ढाँचे की तुलना करते हैं, अर्थात्, जिस तरह से वे एक दूसरे से संबंध बनाते हुए धर्मविज्ञान को संगठित करते हैं।

051

आधारभूत ढाँचा

विधिवत धर्मविज्ञान विशेष रूप से कलीसियाई इतिहास में सदियों से विकसित एक मूलभूत रूपरेखा का अनुसरण करता है। जैसा कि हमने पहले ही देखा है कि लगभग सभी प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञानी या धर्मशास्त्री इन्हीं विचारों पर निर्मित हैं अर्थात् सबसे पहले पवित्रशास्त्र का सिद्धांत, या परमेश्वर का सिद्धांत – फिर, मनुष्य का धर्मविज्ञान, उद्धार का धर्मविज्ञान, कलीसिया का धर्मविज्ञान और युगांत संबंधी धर्मविज्ञान आता है।

052

अब, नए नियम के साथ परिचित प्रत्येक व्यक्ति को समझ जाना चाहिए कि नए नियम के लेखकों ने इन सभी विषयों को स्पर्श किया है। नया नियम पवित्रशास्त्र, परमेश्वर, मनुष्य, उद्धार, कलीसिया और अंतिम दिनों के विषय में शिक्षा देता है। परंतु साथ ही, यह जानकारी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि विधिवत धर्मविज्ञान के विपरीत, नया नियम इन विचारों के साथ असंगठित है। इसकी अपेक्षा, नए नियम के लेखक विस्तृत रूप में अपने धर्मविज्ञान को परमेश्वर के मसीह आधारित राज्य के विषय के चारों ओर निर्मित करते हैं।

053

मसीह के आगमन से सदियों पहले, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने यह प्रकट कर दिया था कि परमेश्वर इस्राएली जाति को उनके पाप के कारण बंधुवाई में ले जाने और अन्यजातियों के अत्याचार के द्वारा सजा देगा। परंतु भविष्यवक्ताओं ने यह भी घोषणा की थी कि अंतिम दिनों में परमेश्वर इस्राएल की बंधुवाई का अंत करेगा और विजय और आशीष के एक नए दिन को ले आएगा। और वह यह कार्य उसके मसीह के द्वारा करेगा, जो कि इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण को, परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध अंतिम न्याय और विश्वासयोग्य यहूदियों और अन्यजातियों के लिए अंतिम आशीषों को लाने के द्वारा स्थापित करेगा। नए नियम के आने के समय तक यहूदियों की कई पीढ़ियों ने बंधुवाई में कठिनाइयों से दुख को उठाया था, और जिसके फलस्वरूप, मसीह के आगमन, और उसके साथ परमेश्वर के राज्य की अंतिम अवस्था, सारे यहूदी धर्मविज्ञान को संगठित करते हुए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण केन्द्रीय विषयों में से एक विषय बन गया था। यहूदी धर्मविज्ञानी बुरी तरह से ऐसे प्रश्नों से भरे हुए थे : “मसीहा कब आएगा?” “कैसे मसीहा न्याय महान के दिन और आशीषों को लाएगा?” और, “कैसे परमेश्वर के लोगों को मसीहा की प्रतीक्षा में जीवन जीना चाहिए?"

054

ये विषय भी नए नियम के लेखकों के लिए मुख्य चिन्ता के विषय थे। नए नियम के लेखकों ने अपने धर्मविज्ञान को परमेश्वर के राज्य की अंतिम अवस्था और मसीह के चारों ओर निर्मित किया। परंतु उन्होंने ऐसा विशेष रूप से मसीही तरीकों में किया।

055

यीशु और उसके प्रेरितों ने स्पष्ट किया कि बंधुवाई के अंत में और परमेश्वर के मसीहारुपी राज्य का आगमन एक सरल, सीधे साधे तरीके से नहीं प्रकट होगा जैसा कि अधिकांश यहूदी धर्मविज्ञानियों ने अपेक्षा की थी। नए नियम के लेखकों के मूल लक्ष्यों में से एक यह उल्लेख करना था कि बंधुवाई और पाप के इस युग से प्रतिज्ञात् परमेश्वर के मसीहारुपी राज्य में परिवर्तन एक जटिल और विस्तृत प्रक्रिया है। नए नियम के अनुसार, यीशु ने बंधुवाई के अंत और प्रतिज्ञात् मसीहारुपी राज्य का उदघाटन किया जब वह इस पृथ्वी पर यहाँ था। एक दिन मसीह पुनः आएगा और अपने राज्य को अंतिम न्याय और आशीष की महिमामयी पराकाष्ठा अर्थात् शिरो-बिन्दु पर ले आएगा। परंतु उस समय तक, बंधुवाई के युग और परमेश्वर के मसीहारुपी राज्य का युग एक साथ अस्तित्व में बने रहेंगे।

056

नए नियम के लेखको ने जो कुछ विश्वास किया उसे इसी मूलभूत रूपरेखा के अनुसार निर्मित किया। उदाहरण के लिए, उन्होंने परमेश्वर की अमूर्त रूप में व्याख्या नहीं की, वे तो मूलभूत रूप से यह व्याख्या करने में रूचि रखते थे कि कैसे परमेश्वर ने पाप के इस युग में कार्य किया है, वह कैसे अब युगों के एक दूसरे पर होने के मध्य में कार्य करता है और कैसे वह आने वाले युग में कार्य करेगा। वे मसीह के सिद्धांत पर कोई सैद्धांतिक विचार विमर्शों को प्रस्तुत नहीं करते। इसकी अपेक्षा, वे व्याख्या करते हैं कि राज्य के आरंभ में, निरंतरता और शिरोबिन्दु के समय में वह कौन था।

057

पवित्र आत्मा का भी इन तीन अवस्थाओं में वर्णन किया गया है कि, “वह जो आया था,” “वह जो अब कलीसिया को सामर्थी बनाता है,” और “वह जो एक दिन सब को परिपूर्ण कर देगा।” यहाँ तक कि उद्धार के सिद्धांत को इसी अवधारणीय नमूने पर रूपरेखित किया गया है। उद्धार कुछ ऐसी बात थी जिसे पहले से ही प्राप्त कर लिया गया है, परंतु इसे राज्य की निरंतरता के मध्य में भी प्राप्त किया जा रहा है और यह पूरी तरह से तब प्राप्त किया जाएगा जब मसीह अपनी महिमा में पुनः वापस आएगा। इस अर्थ में, नए नियम की मूलभूत रूपरेखा विधिवत धर्मविज्ञान की मूलभूत रूपरेखा से बिलकुल ही भिन्न है।

058

इस तरह से हम विधिवत धर्मविज्ञान और नए नियम के धर्मविज्ञान के बीच की तुलना के द्वारा प्रकट होती हुई समानताओं और भिन्नताओं को देखते हैं। विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में निहित है; इसके सारे कथन और धर्मवैज्ञानिक दावे समान धर्मसिद्धांतों और तथ्यों की पुष्टि करते हुए बाइबल के प्रति सच्चे होने चाहिए। इस अर्थ में, ये दोनों एक दूसरे से बहुत सदृश हैं। परंतु इसके साथ-साथ, विधिवत धर्मविज्ञान और नए नियम के धर्मविज्ञान में अत्यन्त महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी हैं।

059

अब क्योंकि हमने नए नियम और विधिवत धर्मविज्ञान के मध्य स्थापित संबंध की खोज कर ली है, हम अब अपने दूसरे विषय : मसीही कलीसिया के अब तक के इतिहास में विधिवत धर्मविज्ञान के विकास पर विचार विमर्श करने के लिए तैयार हैं।

060

ऐतिहासिक घटनाक्रम

जैसा कि हमने देखा है, विधिवत धर्मविज्ञान् कई विशेष तरीकों से नए नियम के धर्मविज्ञान से भिन्न है। परंतु ये भिन्नताएँ कई गंभीर प्रश्नों को उठाती हैं : “ प्रोटेस्टेंटवादियों ने, जो पवित्रशास्त्र के प्रति बहुत समर्पित हैं, एक ऐसी धर्मवैज्ञानिक पद्धति का समर्थन क्यों किया हैं जो नए नियम से बहुत ज्यादा भिन्न है?” “ विधिवत धर्मविज्ञान विश्वासयोग्य मसीहियों के लिए धर्मविज्ञान के निर्माण का एक सबसे प्रतिष्ठित तरीका कैसे बन गया?"

061

हम इस विषय को संक्षेप में ऐसे प्रस्तुत कर सकते हैं। विधिवत धर्मविज्ञान कलीसिया के द्वारा बदलते हुए संसार में सेवा करते हुए और इसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एक लम्बी प्रक्रिया में से होकर आया है। जैसे जैसे मसीहियत यरूशलेम से संसार के अन्य भागों में फैलती चली गई, मसीही धर्मविज्ञानियों को कई प्रकार के बदलावों और चुनौतियों के प्रति उत्तर देना था। और उन्होंने इसे कई भागों में बाइबल की शिक्षाओं को स्पष्ट करने और लागू करने के द्वारा किया। अंत में, जिन रणनीतियों का उन्होंने उपयोग किया वे विधिवत धर्मविज्ञान के रूप में विकसित हो गईं।

062

सर्वप्रथम, बहुत से मसीहियों ने सांस्कृतिक बदलावों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए अपने विचार को धर्मविज्ञान के रूप में आकार देना सोचा। परंतु नया नियम यह स्पष्ट कर देता है कि मसीह के अनुयायी होने के नाते हमारा उत्तरदायित्व पवित्रशास्त्र में प्रकट सत्य को मजबूती से थामे रहना है और इस सत्य को ऐसे संप्रेषित करना है ताकि अन्य लोग इसे समझ सकें। सच्चाई तो यह है कि स्वयं मसीह ने हमें महान आदेश में ऐसा करने की शिक्षा दी है। मत्ती 28:19-20 में उसके शब्दों को सुनिए :

063

इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्राआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ (मत्ती 28:19-20)।

064

064

यहाँ पर कुछ ध्यान दीजिए : यीशु ने यह नहीं कहा कि, “इसलिए जाओ और सारी जातियों के लोगों को बाइबल पढ़कर सुनाओ।” अब, पवित्रशास्त्र का सार्वजनिक पाठन कलीसिया के मिशन में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, परंतु यह वह बात नहीं है जिसे यीशु ने महान आदेश में करने के लिए आज्ञा दी है। उसके इस आदेश को पूरा करने के लिए हमें उसके वचन की “शिक्षा” देनी है, उसके पवित्रशास्त्र की शिक्षा देनी है।

065

दूसरे शब्दों में, हमें पवित्रशास्त्र के सत्यों को संप्रेषित करने के लिए तरीकों की खोज करनी है, और इसमें हमेशा जो कुछ हम बाइबल में पाते हैं उसको आकार देना और स्पष्ट करना सम्मिलित होता है ताकि हमारे चारों ओर के लोग इसे समझ सकें। शिक्षण की इच्छा, प्रभावशाली तरीके से संप्रेषण, और महान आदेश को पूरा करने के द्वारा ही विधिवत धर्मविज्ञान अस्तित्व में आया है और आज भी निरंतर बना हुआ है।

066

हम संक्षेप में तीन मुख्य ऐतिहासिक घटनाक्रमों का विवरण देंगे जिन्होंने इस विधिवत धर्मविज्ञान का मार्गदर्शन किया है जिसे हम आज देखते हैं : पहला धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान, जो कि मोटे तौर पर 150 ईस्वी से 600 ईस्वी तक बना रहा, और फिर यह विधिवत धर्मविज्ञान की ओर बढ़ने लगा। दूसरा, मध्यकालीन धर्मविज्ञान जो कि मोटे तौर पर 600 ईस्वी से लेकर 1500 ईस्वी तक बना रहा, जब धर्मविज्ञान के प्रति दृष्टिकोणों का विकास हो रहा था जो कि विधिवत धर्मविज्ञान के लिए तत्काल रूप से अग्रदूतों के समान था। और तीसरा, प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान, वे रूप जिनमें प्रोटेस्टेंट लोगों ने 1500 ईस्वी से लेकर आज तक विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण किया है। आइए मसीह और इसके प्रेरितों के समय के पश्चात् धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य विधिवत धर्मविज्ञान की ओर होने वाले कुछ आरंभिक आन्दोलनों से आरंभ करें।

067

धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान

विधिवत धर्मविज्ञान की ओर इस मुख्य कदम को समझने के लिए हम दो विषयों को स्पर्श करेंगे : पहला, प्रेरितों के बाद कलीसियाई धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य कलीसिया द्वारा अनुभव किए गए सांस्कृतिक परिवर्तन; और दूसरा, वे धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन जो कि संस्कृति में आए इन परिवर्तनों के फलस्वरूप सामने आए। आइए सर्वप्रथम उन सांस्कृतिक परिवर्तनों से आरंभ करें जो कि धर्माध्यक्षीय-कालीन अवधि के मध्य घटित हुए।

068

068

सांस्कृतिक परिवर्तन

सबसे बड़े परिवर्तनों में से एक जिसका आरंभ की कलीसिया ने प्रेरितों के समय के पश्चात् सामना किया वह मसीहियत के केंद्र का का अपने घर फिलिस्तीन से अन्यजाति में एक नए घर की ओर बढ़ना था। यह परिवर्तन इतना ज्यादा निर्णायक था कि यहूदियों की अपेक्षा, अन्यजाति के लोग कलीसिया के अग्रणी धर्मवैज्ञानिक बन गए।

069

नेतृत्व में आए इस परिवर्तन ने उन तरीकों में विशेष परिवर्तनों किए जिसमें मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण हुआ था। जब अन्यजाति से आए हुए धर्मविज्ञानियों ने उनके अन्यजाति संसार में सुसमाचार की सेवा करने का प्रयास किया तो वे अपने विश्वास की व्याख्या और बचाव उन तरीकों में करने लगे जो कि उस समय की यूनानी-रोमी संस्कृति के लिए प्रासंगिक थे। वे मसीहियत की व्याख्या अपने दिनों के यूनानी दार्शनिक विचारों के संदर्भ में करने लगे।

070

अत्यन्त रूचिपूर्ण बात तो यह है कि मसीही विश्वासी पहले लोग नहीं थे जो पवित्रशास्त्र को यूनानी विचारधारा वाली संस्कृति के साथ सार्थक तरीके से संपर्क में लाए। मसीह के आगमन से सदियों पहले, असँख्य यहूदी अन्यजाति संसार में पूरी तरह बिखरे हुए थे। जब वे उस संसार में अपने पुराने नियम के विश्वास के अनुसार जीवन जी रहे थे, यहूदी मिशनरियों या प्रवर्तकों ने यहूदीवाद और अन्यजाति संसार में व्याप्त खाई को पाटने का प्रयास किया था।

071

अब जब ये यहूदी अन्यजातियों के पास पहुँचे, तो उन्होंने दो मार्गो को लिया जिनका अनुसरण उनके पश्चात् मसीहियों ने किया। एक तरफ तो अधिकांश यहूदियों ने अपने विश्वास को यूनानी विचाराधारा से इतना ज्यादा रंग लिया कि वे मिश्रित अर्थात् दो धर्मों की मिली जुली शिक्षा में पड़ गए। उन्होंने अनुचित रीति से पुराने नियम के विश्वास को मूर्तिपूजक मान्यताओं और प्रथाओं के साथ मिला दिया। इस तरह के मिश्रितवाद के सबसे उत्तम ज्ञात उदाहरणों में से एक सिकन्दरिया के फिलो के लेख में मिलता है जो कि 30 ईसा पूर्व से लेकर 50 र्ईस्वी तक रहा। फिलो ने पुराने नियम के विश्वास और अन्यजातिय बौद्धिक संस्कृति के मध्य की भिन्नता को मूसा की पुस्तक को रूपक के रूप में मानते हुए और ये तर्क देते हुए कम करने की कोशिश की कि यहूदी विश्वास सम्मानजनक था क्योंकि यह यूनानी दर्शनशास्त्र के साथ सामंजस्य में था।

072

इसके साथ-साथ अनेक यहूदियों ने इन सदियों के दौरान बाइबल आधारित विश्वास के साथ बिना कोई गंभीर समझौता किए यूनानी संस्कृति में वैधानिक रूप से सेवकाई करने के तरीकों को खोज लिया था। इस तरह की सेवकाई के सबसे बड़े उदाहरणों में से एक सेप्तुआजिन्त अर्थात्, पुराने नियम के यूनानी अनुवाद की रचना थी। पुराने नियम का यूनानी अनुवाद संपूर्ण भूमध्यसागरीय संसार के यहूदी आराधनालयों में किया गया था ताकि वे यहूदी और अन्यजाति जो इब्रानी को समझने में असमर्थ थे पवित्रशास्त्र का उपयोग कर सकें।

073

धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य मसीही विश्वासी धर्मविज्ञानी भी इन दो दिशाओं की ओर ही कार्यरत् हुए। एक तरफ तो कई कलीसियाई अगुवे मसीही मिश्रितवाद में गिर गए क्योंकि वे अपने प्रयासों में नए नियम के विश्वास को यूनानी विचारधारा वाले बनाने में बहुत दूर तक चले गए। उन्होंने सच्ची मसीहियत को मूर्तिपूजक आस्थाओं और प्रथाओं के साथ मिश्रित कर दिया। नए नियम की कलीसिया में कई तरह के मिश्रितवाद पहले से ही उठ खड़े हुए थे, परंतु धर्माध्यक्षीय अवधि के दौरान कई जाने-पहचाने अप्रामाणिक सम्प्रदाय जैसे ईबियोनिज्म बासिलीडीज्म और नोस्टीसिज्म मसीहियत में विकसित हुए। दूसरी तरफ, जबकि कट्टरवादीय मसीही धर्मविज्ञानियों ने मिश्रितवाद का विरोध किया, और उन्हें अपने चारों के यूनानी विचारधारा वाले दृष्टिकोणों के साथ पारस्परिक व्यवहार करते हुए मूर्तिपूजक संसार में वैधानिक रूप से सेवकाई करने के तरीके मिले। जब इन सच्चे विश्वासियों ने मसीह के आदेश को सभी जातियों तक पहुँचाने के लिए ले लिया तो उन्होंने अपने धर्मविज्ञान को समकालीन दर्शनशास्त्र और धार्मिक दृष्टिकोणों के संदर्भ में बाइबल आधारित सत्यों के साथ बिना कोई समझौता किए व्यक्त किया।

074

इन सांस्कृतिक परिवर्तनों को अपने ध्यान में रखते हुए, हमें कुछ उन तरीकों को देखना चाहिए जिसमें अधिकारिक मसीही धर्मविज्ञान ने धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य अन्यजाति संसार में सेवकाई की चुनौतियों का सामना किया। वे कौन सी सामान्य धर्मवैज्ञानिक प्रवृतियाँ है जो कि मसीही धर्मविज्ञान में उस समय की अवस्था में प्रकट हुईं?

075

धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन

धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य, भूमध्यसागरीय संसार में प्रमुख दार्शनिक और धार्मिक विचारधारा एक ऐसा सामान्य दृष्टिकोण था जिसे नीओ-प्लेटोवाद के नाम से जाना जाता था। शब्दावली “नीओ-प्लेटोवाद “ दृष्टिकोणों के एक बहुत बड़े समूह, और एक विस्तृत धार्मिक दर्शनशास्त्र को प्रस्तुत करती है। इसे नीओ-प्लेटोवाद इसलिए पुकारा जाता है क्योंकि यह प्लेटो की शिक्षाओं में निहित था, परंतु साथ ही इसमें नए विचारों को सम्मिलित किया गया था जिन्हें दार्शनिक जैसे प्लेटीनुस जो कि 203 से 279 ईस्वी तक रहा, के द्वारा परिचित कराया गया था।

076

यद्यपि यह धार्मिक दर्शनशास्त्र जटिल था, हम इसके केन्द्रीय विषयों को तीन रूपों : द्वैतवाद, बुद्धिवाद और रहस्यवाद के संदर्भ में सारगर्भित कर सकते हैं।

077

सर्वप्रथम, नीओ-प्लेटोवाद द्वैतवादी था। इसने आत्मिक और भौतिक लोकों के मध्य एक मूलभूत विपरीतता की शिक्षा दी। नीओ-प्लेटोवादी द्वैतवाद में शुद्ध आत्मा को अच्छा माना जाता था और शुद्ध पदार्थ को बुरा माना जाता था। यद्यपि स्वयं परमेश्वर को दोनों लोकों अर्थात् आत्मिक और भौतिक से ऊपर माना जाता था, फिर भी अपनी भलाई में परमेश्वर ने अपनी दिव्य बुद्धि, ज्योति या वचन को आत्मिक और भौतिक संसारों में फैलाया। यह दिव्य शक्ति परमेश्वर से निकलती है और पूरी वास्तविकता में बहती हुई, व्यवस्था और ढाँचे की मात्रा को, पहले आत्मिक लोक से आरंभ करते हुए और इसके पश्चात् नीचे की ओर भौतिक संसार में आती चली जाती है।

078

इस द्वैतवादी दृष्टिकोण के कुछ निश्चित उपयोग उन अर्ठों पर आधारित थे जिनमें मनुष्यों को अपना जीवन जीना था। लोगों के लिए कहा जाता था कि वे भौतिक संसार में जन्म लेते हैं, यहाँ तक कि शारीरिक लोक के कारावास में हैं। परंतु नीओ-प्लेटोवाद ने शिक्षा दी कि इस भौतिक संसार के साथ सारे संबंधों को दूर करने के द्वारा मानव जीवन के लिए सबसे सर्वोत्तम भली बात परमेश्वर की खोज करना है।

079

परमेश्वर की खोज में इस भौतिक संसार से सारे तरह के संबंधों को तोड़ने की यह धारणा हमें नीओ-प्लेटोवाद की दूसरी मुख्य बात बुद्धिवाद या विवेकवाद की ओर ले आती है।

080

जब लोगों ने भौतिक संसार के अपने कारावास पर जय पाने की कोशिश की तो उन्हें मानवीय तर्कशक्ति पर ध्यान केन्द्रित करना आरंभ करना था, अर्थात् हमारे भीतर की आत्मिक और बौद्धिक क्षमता पर। इसलिए सावधानी से किये गए तर्क और आत्मबोध के द्वारा लोग स्वयं को उलझाने वाली बुरी बातों से दूर रखने का प्रयास भी कर सके।

081

जितना महत्वपूर्ण विवेकपूर्ण मनन था, यह सच्चे धार्मिक व्यक्ति के लिए आरंभ ही था। नीओ-प्लेटोवाद ने मनुष्य को तर्कशक्ति से परे जाने के लिए बुलाहट दे कर रहस्यवाद में जाने को कहा। संसार से पूरी तरह अलग होने के लिए और परमेश्वर के साथ पूर्ण रूप से एक होने के लिए, लोगों को उनके स्वयं की बौद्धिक शक्तियों से परे जाना था और स्वयं परमेश्वर की ऊचाँइयों तक पहुँचना था।

082

क्योंकि नीओ-प्लेटोवाद यह विश्वास मानता था कि परमेश्वर सबसे परे, यहाँ तक कि मनुष्य की तर्कशक्ति से परे सर्वश्रेष्ठ है, सबसे अंत में मनुष्य परमेश्वर के साथ केवल तब ही एक हो सकता है जब वह रहस्यमयी प्रकाशन को प्राप्त करता है जो कि केवल मनुष्य के आत्मबोधों से बहुत परे की बात है। यह आत्मिक आनन्द दिव्य प्रकाश की प्रेरणा और पूरी सृष्टि में निकलते हुए शब्द के द्वारा आने वाली थी। और इसका परिणाम होना था परमेश्वर के साथ एकता, परम सुख और मनुष्य के गंतव्य की सबसे बड़ी पूर्णता।

083

ये दार्शनिक और धार्मिक विचारधाराएँ भूमध्यसागरीय संसार में धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य इतनी ज्यादा प्रचलित थीं कि विश्वासयोग्य मसीही धर्मविज्ञानी इनसे व्यवहार किए बिना न रह सके। सच्चाई तो यह है कि उनके कई धर्मवैज्ञानिक विचार-विमर्श नीओ-प्लेटोवादी धारणाओं के संदर्भ में रचे गए।

084

इनमें से बहुत से प्रयास पर्याप्त मात्रा में वैध हैं। उदाहरण के लिए, आरंभिक कलीसिया की बड़ी सार्वभौमिक महासभाएँ जैसे कांस्टेन्टिनोपल और चाल्सीदोन की महासभाओं ने नीओ-प्लेटोवादी दृष्टिकोणों के साथ बाइबल आधारित मान्यताओं को व्यक्त किया है। जाने-पहचाने अग्रणी मसीही धर्मविज्ञानी जैसे सिकन्दरिया का क्लेमेन्ट, ओरेगन और यहाँ तक कि अगस्तीन ने भी मूलरूप से स्वयं को उन संदर्भों में व्यक्त किया जो कि नीओ-प्लेटोवादियों से परिचित थे।

085

धर्माध्यक्षीय अवधि के मध्य विश्वासयोग्य मसीही धर्मविज्ञानियों ने अपने ध्यान को नीओ-प्लेटोवाद पर सच्चे सुसमाचार के प्रति अपनी मूलभूत प्रतिबद्धताओं से परिवर्तित करने के लिए केन्द्रित नहीं किया था। वे बड़ी शक्ति के साथ बाइबल आधारित सत्यों को थामे रहे। परंतु नीओ-प्लेटोवाद के प्रति उनकी जागरूकता ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या उन तरीकों में करने के लिए कोई सहायता नहीं की जिसमें वे और उनके समकालीन समझ सकते थे। और इन तरीकों से उनकी संस्कृति के साथ वार्तालाप करने के द्वारा, उन्होंने सुसमाचार का विस्तार और कलीसिया का निर्माण किया, और बहुत से अविश्वासियों को मसीह के बचाने वाले ज्ञान के पास ले आए।

086

कई तरीके हैं जिनमें हम धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान पर नीओ-प्लेटोवाद के पड़े प्रभाव को संक्षेप में प्रस्तुत कर सकते हैं। परंतु हमारे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हम धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की तीन विशेषताओं की ओर संकेत करेंगे जो कि नीओ-प्लेटोवाद के हमारे सार के समानान्तर हैं: धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की आत्मिक प्राथमिकताएँ, तर्कशक्ति की महत्वपूर्णता, और रहस्यवाद की महत्वपूर्णता। आइए सबसे पहले धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं पर ध्यान केन्द्रित करें जो कि नीओ-प्लेटोवाद के द्वारा प्रभावित हुई थीं।

087

प्राथमिकताएँ। आपको याद होगा कि नीओ-प्लेटोवाद की एक विशेषता आत्मिक और भौतिक लोकों के मध्य द्वैतवाद की थी। धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान ने इस द्वैतवाद के प्रति प्रतिक्रिया बाइबल की शिक्षाओं को संगठित और प्रस्तुत करते हुए एक ऐसे तरीके में रखते हुए व्यक्त की जिसने रोजाना की सांसारिक बातों की अपेक्षा आत्मिकता को प्राथमिकता दी, जो कि धर्मविज्ञान के लिए एक ऐसा दृष्टिकोण ठहरा जिसे हम “ऊपर से आया हुआ धर्मविज्ञान” कहेंगे। एक शब्द में, ऊपर से आया हुआ धर्मविज्ञान ऐसा धर्मविज्ञान है जो कि नीचे के आत्मबोध, ज्यादा सांसारिक विषयों की अपेक्षा उच्च आत्मिक आत्मबोध – परमेश्वर पर ध्यान से प्राप्त आत्मबोध और इसके मार्गों को प्रथम स्थान देता है: अर्थात् “परमेश्वर का क्या सार तत्व है?” “उसकी क्या विशेषताएँ हैं?” “परमेश्वर की एकता क्या है?” “त्रिएकता क्या है?” ये धारणाएँ धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान में उस आत्मबोध की अपेक्षा बहुत ज्यादा विशेष थी जो कि इस भौतिक संसार में मनुष्य के जीवन और परिस्थिति के साथ था। ये प्राथमिकताएँ धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान की पहचान बन गई।

088

दूसरे स्थान पर, मसीही धर्मविज्ञानियों ने धर्मविज्ञान में तर्कशक्ति की महत्वपूर्णता को, धर्मविज्ञान में एक प्राथमिक औजार के रूप में उपयोग करते हुए तार्किक आत्मबोध पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बहुत अधिक प्रशंसा को प्राप्त किया।

089

तर्कशक्ति। जैसा कि हमने देखा लिया है, नीओ-प्लेटोवाद का एक मुख्य गुण वह धारणा थी जिसमें मनुष्य का दायित्व मानवीय तर्कशक्ति का उपयोग कर इस भौतिक संसार से ऊपर उठना था। नीओ-प्लेटोवाद के द्वारा बौद्धिक आत्मबोध पर दिए हुए बल के प्रति प्रतिक्रिया में, कलीसिया के आरंभिक धर्माध्यक्षों ने मसीही धर्मविज्ञान में बौद्धिक आत्मबोध पर जोर देना आरंभ किया। अग्रणी मसीही धर्मविज्ञानियों ने अपने ध्यान को और भी ज्यादा मसीही मान्यताओं की व्याख्या और तर्कसंगत जांच के लिए सावधानी से उपयोग किया, जिसके कारण नए नियम के बहुत से धर्मसिद्धांत जिन्हें अनिर्दिष्ट और छानबीनरहित छोड़ दिया गया था तर्कसंगत आत्मबोध के विषय बन गए।

090

उदाहरण के लिए, नए नियम के धर्मविज्ञान ने त्रिएकता जैसे धर्मसिद्धांतों को व्यापक रूप से अस्पष्ट ही रहने दिया; नए नियम के लेखकों ने त्रिएकता के व्यक्तित्वों के मध्य के संबंधों के किसी विवरण को संबोधित नहीं किया है। परंतु, धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान में, धर्मविज्ञानियों ने तर्कसंगत विश्लेषण का उपयोग यह स्पष्ट करने के लिए किया कि नए नियम के लेखक त्रिएकता के बारे में क्या विश्वास करते थे, यद्यपि बाइबल के लेखकों ने अपने दृष्टिकोणों का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया है।

091

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में परमेश्वर के बारे में उठी झूठी शिक्षाओं की प्रतिक्रिया में, आरंभिक कलीसियाई धर्माध्यक्षों ने स्वयं को तर्कसंगत आत्मबोध के द्वारा सावधानी से की गई भिन्नताओं के लिए समर्पित करते हुए, जितना ज्यादा सम्भव हो सकता था, उन सभी बातों पर कार्य किया जिन्हें नए नियम में छोड़ दिया गया था। इस तरीके से धर्मविज्ञान के लिए तर्कशक्ति का उपयोग धर्मविज्ञानियों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण गुण बन गया जब उन्होंने उनके नीओ-प्लेटोवादी संसार में सेवकाई की।

092

तीसरे स्थान पर, धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञान ने नीओ-प्लेटोवाद के द्वारा रहस्यवाद पर दिए जोर की प्रतिक्रिया में रहस्यवाद या भावातीत आत्मिक जागृति पर भी ध्यान केन्द्रित किया।

093

रहस्यवाद। जैसा कि हमने देखा था, नीओ-प्लेटोवाद में मनुष्य के मन पर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा सावधानी से किया गया तर्क परमेश्वर के साथ उच्च, रहस्यात्मक स्तर की एकता के लिए मात्र आगे की ओर बढ़ाया गया एक कदम है। तर्क सीमित था और उच्च आत्मिक वास्तविकताओं को समझ नहीं सकता है और इन उच्च स्तरों तक पहुँचने के लिए विशेष प्रकाश की आवश्यकता होती है।

094

इसी तरह से जब आरंभिक कलीसियाई धर्माध्यक्षों ने त्रिएकता, या मसीह के ईश्वरत्व और मनुष्यत्व, या कलीसिया और संस्कार जैसे धर्मसिद्धांतों को समझाया तो उन्होंने अक्सर यह अंगीकार किया कि इन धर्मसिद्धांतों के कुछ तत्व मानवीय तर्कशक्ति से परे की बात थी। निरंतर उनके तर्कसंगत विचार विमर्श इस स्वीकारोक्ति के साथ जुड़े हुए थे कि मसीही विश्वास के उच्च सत्य बस यों ही व्याख्या या तर्कसंगत रूप से इनका खण्डन नहीं किया जा सकता है। इसकी अपेक्षा, उन्हें मात्र रहस्यमयी आत्मबोध के द्वारा, अलौकिक अनुभवों के द्वारा ही जाना जा सकता है जो कि मनुष्य की तार्किक शक्ति की पहुँच से बहुत ही ऊँचे हैं। धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान ने परमेश्वर के प्रकाशन की सेवा में तर्कशक्ति का उपयोग किया, परंतु इसने अधिकत्तर शिक्षा तार्किक प्रमाणों की अपेक्षा आत्मिक अंतर्ज्ञान से पाई।

095

इसी प्रकार धर्माध्यक्षीय अवधि के धर्मविज्ञानियों ने उनके अन्यजाति संसार में मसीही धर्मविज्ञान की शिक्षा देने, उसे खोजने और उसका बचाव करने की चुनौतियों का सामना किया, तो उनकी रणनीतियों और प्रबलताओं में परिवर्तन आया। भौतिकता से आत्मिकता की ओर उनकी प्राथमिकता, या ऊपर से आया हुआ धर्मविज्ञान, तर्कसंगत विश्लेषण का उपयोग और रहस्यवाद पर निर्भरता के इन परिवर्तनों ने कलीसिया के लिए मार्ग को निर्धारित कर दिया जिसने अंतत: उस ओर मार्गदर्शन किया जिसे हम आज के दिनों में विधिवत धर्मविज्ञान के रूप में जानते हैं।

096

अब क्योंकि हमने यह देख लिया है कि कैसे धर्मविज्ञानियों ने मसीही धर्मविज्ञान को उनकी यूनानी विचारधारा वाली संस्कृति में धर्माध्यक्षीय अवधि में समझाना आरंभ किया, हमें अब मध्यकालीन धर्मविज्ञान की ओर मुड़ना चाहिए, जब मसीही विश्वासी और ज्यादा निर्विरोध तरीके से मानवीय तार्किकता और तर्क के यूनानी विचारधारा वाले दृष्टिकोणों को मसीही धर्मविज्ञान पर लागू करने लगे। हमारा ध्यान एक धर्मवैज्ञानिक आन्दोलन की ओर होगा जिसे अक्सर विद्वतावाद कह कर पुकारा जाता है जो कि लगभग 600 ईस्वी से लेकर 1500 ईस्वी के मध्य में विकसित हुआ।

097

मध्य-कालीन धर्मविज्ञान

विद्वतावाद के प्रति हमारी छानबीन वैसी ही होगी जिसमें हमने धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान को देखा। एक ओर तो हम उन सांस्कृतिक परिवर्तनों को देखेंगे जिसने विद्वतावाद को जन्म दिया। और दूसरी ओर, हम इसके फलस्वरूप आए कुछ धर्मवैज्ञानिक परिवर्तनों की खोज करेंगे। आइए उन सांस्कृतिक परिवर्तनों के बारे में सबसे पहले देखें जो कि इन सदियों के मध्य घटित हुए हैं।

098

098

सांस्कृतिक परिवर्तन

आरंभ करने के लिए, हमें पहले इस शब्द “विद्वतावाद “ के अर्थ की ओर संकेत करना चाहिए जो कि आरंभिक मध्यकालीन यूरोप में उच्च शिक्षा के विद्यालयों से आता है। उन विद्यालयों में व्याख्यान् द्वन्द्वात्मक पद्धति पर आधारित होते थे, जिसे सामान्य रूप से आधुनिक युग में “तर्क” के नाम से पुकारा जाता है, जो कि लैटिन शब्द स्कोलॉस्टिकस के नाम से जाना जाता है। विस्तृत रूप से, ये व्याख्यान् अरस्तू के तर्क के सिद्धांत पर निर्भर होकर सिखाए जाते थे। फलस्वरूप शब्द “विद्वतावाद “ का उपयोग दर्शनशास्त्र और धर्मविज्ञान पर लागू हो गया जो कि अधिकत्तर अरस्तू के दर्शनशास्त्र में दिए हुए तर्क के सिद्धांतों पर निर्भर है।

099

मध्ययुगीन दर्शन पद्धति के फलस्वरूप एक बहुत ही महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तन मध्यकालीन युग में घटित हुआ। यह परिवर्तन तब घटित हुआ जब भूमध्यसागरीय संसार के बौद्धिक समाज नीओ-प्लेटोवाद से दूर हो गए और अरस्तू के दर्शनशास्त्र की ओर मुड़ गए। और इस परिवर्तन के फलस्वरूप, अग्रणी मसीहियों को तो उन तरीकों को ग्रहण करना था जिनमें उन्होंने मसीही धर्मसिद्धांतों की व्याख्या और उसका बचाव अरस्तू आधारित दर्शनशास्त्र के विरूद्ध किया।

100

इसमें कोई संदेह नहीं है कि विद्वतावाद की ओर इस परिवर्तन ने हजारों वर्षों का समय लिया, और वहाँ पर इसके प्रति बहुत अधिक विरोध था, विशेषकर मसीही रहस्यवादियों की ओर से। परंतु अल्बर्ट मोगनस या “अल्बर्ट महान” के समय के आने तक, जो कि लगभग 1206 से लेकर 1280 के आसपास रहा, और जो थॉमस अक्विनॉस, जो कि लगभग 1225 से लेकर 1274 के आसपास रहा, का जाना-पहचाना शिष्य था, विद्वतावाद ने मसीही धर्मविज्ञान को प्रस्तुत किया। धर्मसुधार के ठीक पहले मसीही धर्मविज्ञान की मुख्य धारा गहनता से अरस्तू आधारित दर्शनशास्त्रीय दृष्टिकोणों के अनुरूप थी।

101

अब क्योंकि हमने ऐसे कुछ सांस्कृतिक परिवर्तनों को देख लिया है जिसने विद्वतावाद को जन्म दिया, हमें अब इसकी कुछ मूलभूत विशेषताओं की ओर मुड़ना चाहिए। मसीही धर्मविज्ञान में विद्वतावाद को मुख्य दृष्टिकोण के रूप में किस बात ने चिन्हित किया।

102

धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन

यद्यपि धर्माध्यक्षीय और विद्वतावाद के धर्मविज्ञान के मध्य कई समानताएँ हैं, परंतु इनमें कम से कम एक बहुत ही महत्वपूर्ण भिन्नता है। धर्माध्यक्षीय धर्मविज्ञान अपने पूरे रूप में इस बात को थामे रखता है कि सर्वोत्तम धर्मवैज्ञानिक अंतर्दृष्टियाँ रहस्यवादी प्रेरणाओं के माध्यम से आती हैं। परंतु विद्वतावाद बहुत ही उच्च तर्कसंगत था, यह पूरे धर्मविज्ञान के मण्डन, व्याख्या, और खोज के लिए तर्क के मूल्य पर जोर देता है। भौतिक और आत्मिक संसार, और यहाँ तक कि स्वयं परमेश्वर, का विश्लेषण भी तर्क की सावधानी से किया जाना चाहिए था।

103

विद्वतावाद के शिक्षक अरस्तू के तर्क, तत्वमीमांसा, और भौतिकी पर लिखे हुए लेखों से अच्छी तरह पारंगत थे, और उन्होंने मसीही धर्मविज्ञान के प्रस्तुतीकरण को इस तर्कसंगत दृष्टिकोण के साथ समायोजित करना चाहा। और इसी कारण विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञान को समझने के लिए हमें तर्क पर अरस्तू के दृष्टिकोणों की कुछ समझ होनी आवश्यक है।

104

समय हमें केवल इतनी ही अनुमति देता है कि हम तर्क पर अरस्तू के दृष्टिकोणों के चार पहलुओं का उल्लेख करें जिन्होंने विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञान को प्रभावित किया : पहला सटीक शब्दावली की महत्वपूर्णता; दूसरा, साध्यात्मक तर्क या तर्क-वाक्य की आवश्यकता; तीसरा, तर्कसंगत न्यायबद्धता का मूल्य; और अंत में, तर्कसंगत विश्लेषण की प्राथमिकता।

105

शब्दावली। पहला, अरस्तू ने समझ लिया था कि तर्कसंगत, तार्किक आत्मबोध की सफलता हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्दों और कैसे हम इन्हें परिभाषित करते हैं, पर निर्भर करती है।

106

अब, नीओ-प्लेटोवादी और धर्माध्यक्षीय-कालीन धर्मविज्ञानियों के लिए परिभाषाएँ अत्यन्त महत्वपूर्ण थीं। परंतु अरस्तू इन विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने के अपने तरीके में बहुत अधिक ठोस था जिसमें उसने इनसे व्यवहार किया। भौतिक और तत्वमीमांसा पर अपने दृष्टिकोणों पर आधारित होकर, उसने तार्किक रूप से, यहाँ तक कि आरंभिक वैज्ञानिक तरीकों को वर्गीकृत करते हुए किसी एक वस्तु के इसके घटित होने के या इसके अनावश्यक गुणों के सार या तत्व को किसी भी विचाराधीन वस्तु को बाकी की अन्य वस्तुओं से भिन्न करते हुए परिभाषित करते हुए वर्णित किया है।

107

कुछ इसी तरह, अपनी अरस्तू आधारित संस्कृति में स्पष्ट संप्रेषण के लिए, विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने भी धर्मवैज्ञानिक शब्दावलियों को जितना ज्यादा सम्भव हो सटीक रूप में परिभाषित किया है।

108

इस बात को दिखाने के लिए कि कैसे विद्वतावादियों ने अपने धर्मविज्ञान को अरस्तू के द्वारा जोर दी गई सटीक शब्दावली के साथ समायोजित किया, आइए, हम थॉमस अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका नामक पुस्तक में से देखें। वह अध्याय जिसका शीर्षक “क्या परमेश्वर असीमित है?” में अक्विनॉस ने निम्नलिखित आपत्ति का उल्लेख और उत्तर दिया है:

109

 आपत्ति 1. ऐसा जान पड़ता है कि परमेश्वर असीमित नहीं है। इसका कारण सब कुछ जो असीमित है वह अपूर्ण है...क्योंकि इसके कई भाग और विषय हैं...परंतु परमेश्वर सबसे ज्यादा पूर्ण है; इसलिए वह असीमित नहीं है।

110

110

 इस आपत्ति के उत्तर में, अक्विनॉस ने परिभाषा के विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया है। सुनिए उसने इसका उत्तर कैसे दिया :

111

111

 अब विषय उसके आकार के कारण पूर्ण होता है जिसके द्वारा इसे सीमित बनाया गया है; इसलिए जैसा कि विषय को असीमित ठहराया गया है, इसमें अपूर्णता की कुछ प्रकृति है; क्योंकि यह ऐसा है कि जैसा यह बेडौल विषय था।

112

112

ध्यान दें कैसे अक्विनॉस ने इस छोटे से प्रसंग में कई तकनीकी शब्दों का उपयोग किया है। उसने ऐसे शब्दों का जैसे “विषय,” “आकार,” “बेडौल,” “सीमित,” “असीमित,” “पूर्ण” और “अपूर्ण” शब्दों का उपयोग किया है। और उसने इन शब्दों का उपयोग इस तरीके से किया जिन्हें उसके दिनों में समझा जा सकता था क्योंकि वे अरस्तू के द्वारा उपयोग की गई शब्दावलियों के सदृश थे। फलस्वरूप, अक्विनॉस अपने दृष्टिकोणों और अन्यों के दृष्टिकोणों के मध्य उत्तम भिन्नता को दर्शाने के लिए सक्षम हो गया। सटीक शब्दावली वाली परिभाषाओं का ध्यान विद्वतावाद की विशेषता था।

113

इस ध्यान के फलस्वरूप विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञान तकनीकी शब्दों के साथ भरा पड़ा है। विद्वतावादियों ने मसीही धर्मविज्ञान के लिए व्यापक विशिष्ठ शब्दावली का विकास किया। और यह हमारे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि उनकी बहुत सी शब्दावलियाँ निरंतर मसीही धर्मविज्ञान में सदियों से उपयोग की जा रही हैं।

114

विद्वतावाद के मसीही धर्मविज्ञानियों को सटीक शब्दावलियों पर जोर देने के लिए प्रेरित करने के साथ ही, अरस्तू के तर्क पर किए हुए कार्य ने उन्हें धर्मवैज्ञानिक सत्यों को संप्रेषित करने के लिए तर्क-वाक्यों को केन्द्रीय भूमिका प्रदान करने की प्रेरणा दी।

115

तर्क-वाक्य। अपने सबसे सरलतम रूपों में, तर्क-वाक्य वे कथन हैं जो कि किसी विषय से निर्मित हुए हैं और जिनमें कोई एक गुण या लक्षण है। हम अपने प्रतिदिन के वार्तालाप में हर समय तर्क-वाक्यों का उपयोग करते हैं। इस वाक्य पर ध्यान दें कि, “मैं एक व्यक्ति हूँ।” इस तर्क-वाक्य में “मैं” विषय है और “एक व्यक्ति हूँ,” उसका गुण है। और हम सभी धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों से परिचित हैं, जैसे कि “यीशु परमेश्वर का पुत्र है।” इस तरह की सच्चाई के तर्क-वाक्य वाले कथन विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों के लिए आवश्यक थे क्योंकि इन्हें अरस्तू के तर्क के विश्लेषण पर निर्मित किया गया था।

116

अरस्तू ने अपने ध्यान को सबसे ज्यादा इस बात पर लगाया कि कैसे तर्कसंगत विवेक तर्क-वाक्यों के साथ कार्य करता है। उसके दृष्टिकोण में, तर्क अंतर्ज्ञान या भावनाओं, कविता या प्रतीकवाद, पहेलियों या प्रार्थनाओं के भावों के साथ कार्य नहीं करता है। तर्क का लेन देन प्राथमिक रूप से तथ्य के कथनों के साथ होता है। केवल उचित रूप से निर्मित तर्क-वाक्य के साथ हम एक विषय का विश्लेषण करने के लिए तर्क का उपयोग कर सकते हैं।

117

अरस्तू के द्वारा इसपर दिए हुए महत्व के साथ कार्य करते हुए, विद्वतावाद ने बड़ी मेहनत के साथ इसके औपचारिक धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों को व्यक्त किया। अब, थोड़े कम औपचारिक स्तर पर, थोड़े कम शैक्षणिक स्तर पर, विद्वतावाद आधारित धर्मविज्ञानियों ने समझ लिया था कि मसीही विश्वास में अन्य प्रकार के भावों को सम्मिलित किया जाना चाहिए था। बहुत से विद्वतावाद आधारित धर्मवैज्ञानिक धार्मिक थे और उन्होंने अपनी धार्मिक प्रतिबद्धता को कविताओं, भजनों, प्रार्थनाओं और ऐसी ही अन्य बातों के द्वारा व्यक्त किया। परंतु जटिल, शैक्षणिक संदर्भ में धर्मवैज्ञानिक मान्यताएँ सावधानी के साथ निर्मित तर्क-वाक्यों, अर्थात् तथ्यों के कथनों में प्रस्तुत हैं।

118

विद्वतावादी धर्मविज्ञान में तर्क-वाक्यों की केन्द्रीयता को दिखाने के लिए हमें एक बार फिर से अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका नामक पुस्तक की ओर मुड़ना होगा। उसके विचार विमर्श को “क्या परमेश्वर का ज्ञान स्व-स्पष्ट है?” नामक शीर्षक से दिए हुए अध्याय में से सुनें :

119

आपत्ति 1. ऐसा जान पड़ता है कि परमेश्वर का अस्तित्व स्व-स्पष्ट है। अब हमें कही गई वे स्व-स्पष्ट बातें जिनका ज्ञान स्वाभाविक रूप से हममें प्रत्यारोपित किया गया है, जिन्हें हम प्रथम सिद्धांतों के संबंध में देख सकते हैं। परंतु जैसा कि डमासेन कहते हैं (आठवीं शताब्दी के जॉन डमासेन का उल्लेख) कि “परमेश्वर का ज्ञान स्वाभाविक रूप से हम सब में प्रत्यारोपित किया गया है।” इसलिए परमेश्वर का अस्तित्व स्व-स्पष्ट है।

120

120

 अक्विनॉस ने इस आपत्ति का उत्तर इस तरह से दिया:

121

121

कोई भी मानसिक रूप से उसे स्वीकार नहीं करेगा जो स्व-स्पष्ट है के विपरीत है; जैसा कि दार्शनिक (अरस्तू की ओर संकेत) प्रदर्शन के प्रथम सिद्धांतों के संबंध में कहता है। परंतु “परमेश्वर है” के तर्क-वाक्य का उलटा कोई भी मानसिक रूप से स्वीकार कर सकता है: “मूढ़ ने अपने मन में कहा कि,'कोई परमेश्वर है ही नहीं।'“ (भजन संहिता 53:1)। इसलिए परमेश्वर अस्तित्व में है स्व-स्पष्ट नहीं है।

122

122

जैसा कि हम अपेक्षा करते हैं कि, इस प्रसंग का संकेत अरस्तू के क्या स्वयं-स्पष्ट है, के तकनीकी अर्थ के एक विचार की ओर है कि “ कोई भी मानसिक रूप से उसे स्वीकार नहीं करेगा जो स्व-स्पष्ट है के विपरीत है।” परंतु इससे परे, हम देखते हैं कि अक्विनॉस ने उसके विरूद्ध आपत्ति करने वालों को तर्क-वाक्य का उपयोग करते हुए उत्तर दिया है। वह किसी प्रशंसा में या विलाप में नहीं आ गया। उसने अपने विरोधी को डाँटा या धमकी नहीं दी। इसकी अपेक्षा, वह निरंतर उसको तर्क-वाक्यों के साथ उत्तर देता चला गया।

123

हम जो यहाँ अक्विनॉस में देखते हैं वह सामान्य रूप से मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञान की विशेषता थी। मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञानियों ने अपनी औपचारिक धर्मवैज्ञानिक विचार विमर्शों को लगभग पूरी तरह तर्क-वाक्यों तक ही सीमित रखा था। उन्होंने तर्कशक्ति के द्वारा धर्मवैज्ञानिक विषयों को सावधानी से परिभाषित किए हुए तथ्य आधारित कथनों पर अच्छी तरह निर्मित शब्दावलियों के द्वारा समझाया। यह विशेषता औपचारिक मसीही धर्मविज्ञान के लिए इतनी ज्यादा केन्द्रीय बन गई कि यहाँ तक हमारे आज के दिनों में भी तर्क-वाक्य विधिवत धर्मविज्ञान के लिए महत्वपूर्ण बने हुए हैं।

124

विद्वतावाद ने अरस्तू के तर्कों पर दिए हुए आत्मबोधों के साथ जिस तीसरे तरीके के व्यवहार किया को तर्कसंगत न्यायबद्धता की श्रेणी में सारगर्भित किया जा सकता है।

125

न्यायबद्धताएँ। एक शब्द में, एक न्यायबद्धता एक ऐसा तर्कसंगत तर्क है जिसमें तर्क-वाक्यों को प्रमाणों और निष्कर्षों की रचना करने के लिए व्यवस्थित किया जाता है।

126

उदाहरण के द्वारा, एक चिर-परिचित न्यायबद्धता को अक्सर प्राथमिक कक्षा की तर्क आधारित पाठ्य पुस्तकों में सिखाया जाता है जो कुछ इस प्रकार होता है: प्रमाण 1 : सुकरात एक व्यक्ति है। प्रमाण 2 : सभी मनुष्य नश्वर हैं। निष्कर्ष: फलस्वरूप, सुकरात एक नश्वर व्यक्ति है।

127

अरस्तू ने अपने बहुत अधिक समय को इस बात की पहचान लगाने में खर्च कर दिया कि कैसे तर्क-वाक्यों का उपयोग ऐसे तर्कों में किया जा सकता है जो कि निश्चित प्रकार के निष्कर्षों की ओर ले चले। उसने जैसे पहचान का नियम है, जैसे गैर-विरोधाभास का नियम है, और बहिष्कृत मध्य का नियम है, और साथ ही अनुमान के विभिन्न प्रकार के नियम अर्थात्, वह तरीका जिसमें हम सही या तार्किक रूप से विभिन्न प्रकार के प्रमाणों से विभिन्न प्रकार के निष्कर्षों का अनुमान लगाते हैं, की तरह ही तथाकथित “तर्क के नियमों” की खोज की।

128

इसमें कोई संदेह नहीं है कि वास्तविक धर्मवैज्ञानिक तर्क अक्सर बहुत पेचीदा होते हैं, परंतु विद्वतावादी धर्मवैज्ञानिक ऐसे धर्मवैज्ञानिक तर्कों के निर्माण की मंशा रखते थे जो कि अरस्तू के तर्क सिद्धांतों की पुष्टि करते थे।

129

एक बार फिर से अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका के “क्या परमेश्वर का ज्ञान स्व-स्पष्ट है?” के विचार विमर्श पर ध्यान दें। वहाँ पर उसने इस प्रस्ताव का उत्तर दिया है कि परमेश्वर का ज्ञान एक परोक्ष न्यायबद्धता के साथ स्वयं-स्पष्ट है। उसने इन शब्दों को लिखा है :

130

कोई भी मानसिक रूप से उसे स्वीकार नहीं करेगा जो स्व-स्पष्ट है के विपरीत है... परंतु “परमेश्वर है” के तर्क-वाक्य का विपरीत कोई भी मानसिक रूप से स्वीकार कर सकता है: “मूढ़ ने अपने मन में कहा कि,'कोई परमेश्वर है ही नहीं।'“ (भजन संहिता 53:1)। इसलिए परमेश्वर अस्तित्व में है स्व-स्पष्ट नहीं है।

131

131

यहाँ प्रस्तुत न्यायबद्धता को इस तरीके से भी व्यक्त किया जा सकता है। प्रमाण एक : कोई भी मानसिक रूप से जो स्वयं-स्पष्ट है, के विरूद्ध बात को स्वीकार नहीं करेगा। प्रमाण दो: “परमेश्वर है” के तर्क-वाक्य के विपरीत कोई भी मानसिक रूप से स्वीकार कर सकता है। निष्कर्ष: अतः परमेश्वर का अस्तित्व है यह अपने आप में स्पष्ट नहीं है।

132

यह अनुच्छेद केवल एक उदाहरणमात्र है कि कैसे अक्विनॉस ने अपने धर्मवैज्ञानिक आधार को सावधानी से निर्मित तर्क-वाक्य के साथ खोजा और इसका मण्डन किया। और इस विषय के लिए उसका निपटारा मध्यकालीन विद्वतावाद की विशेषता के साथ था। सच्चाई तो यह है कि, तर्क-वाक्य पर इस तरह का ध्यानाकर्षण हमारे आज के दिनों में यहाँ तक कि विधिवत धर्मविज्ञान में भी वैसे ही एक केन्द्रीय गुण के रूप में बना हुआ है।

133

तकनीकी शब्दों पर ध्यान केन्द्रित करने के अतिरिक्त, तर्क-वाक्य और तर्कसंगत न्यायबद्धता पर निर्भरता, मध्यकालीन विद्वतावादियों ने अरस्तु के प्रभाव को उनके धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं में भी प्रदर्शित किया है।

134

प्राथमिकताएँ। अरस्तू ने तर्क का उपयोग वास्तविकता का विश्लेषण एक गतिहीन, तर्कसंगत, पदानुक्रम के संदर्भ में कार्य करने के लिए किया है। उसने प्रत्येक वस्तु पर एक ऊर्ध्वाधर तर्कसंगत क्रम के रूप में देखा। उसके दृष्टिकोण में सारी वस्तुएँ एक पैमाने के एक तरफ निम्न स्तर पर कई गुणा और अपूर्ण पदार्थ और दूसरी तरफ उच्च स्तर पर एकीकृत और पूर्ण आकार में एक दूसरे के साथ कहीं न कहीं आपस में संबंधित हैं। और उसने यह विश्वास किया कि दर्शनशास्त्र के कार्यों में से एक यह पहचान करना है कि वास्तविकता का प्रत्येक हिस्सा इस तर्कसंगत क्रम में सही आकार में आ बैठता है।

135

बहुत ही सरल शब्दों में, परमेश्वर स्वयं पैमाने के उच्च स्तर पर है। वह पहला सिद्धांत है, सभी बातों के कारण के पीछे कारणहीन शक्ति है। परमेश्वर पूर्ण एकता, पूर्ण आकार, पूर्ण प्राणी है। स्वर्गदूत परमेश्वर से एक कदम नीचे आ कर खड़े होते हैं। मनुष्य को स्वर्गदूतों से नीचे रखा गया है क्योंकि वह आत्मिक और भौतिक दोनों है। विभिन्न प्रकारों के पशुओं के जीवन मनुष्यों से नीचे आते हैं; उसके पश्चात् पौधे; जैविक सामग्री इसके पश्चात आती है; वायु, अग्नि, पृथ्वी और पानी के ये चार तत्वों के नीचे अजैविक सामग्री आते हैं; और पैमाने के सबसे नीचे मुख्य पदार्थ आता है।

136

अपने समय की अरस्तू आधारित संस्कृतियों के साथ संप्रेषण करने के लिए, मध्यकालीन विद्वतावादियों ने अपने धर्मविज्ञान को अरस्तू के इसी नमूने पर व्याख्या करने की कोशिश की। उन्होंने अपने धर्मसैद्धांतिक सारों को आकार देने के लिए कठोर परिश्रम ऊपर से आए धर्मविज्ञान के आधार पर की। ऐसा कहने का अर्थ यह हुआ कि, उन्होंने मसीही शिक्षाओं के साथ आरंभ किया और इनपर जोर देने की मंशा करके आरंभ किया जो कि अरस्तू के पदानुक्रम के उच्चत्तम स्तर की समानता में थी और इसके पश्चात् उन्होंने अपनी शिक्षाओं में निम्न स्तर पर कार्य किया जो कि अरस्तू के पैमाने पर निम्न स्तर की समानता में थी। सभी समयों पर, उन्होंने जटिल तर्कसंगत क्रम को स्पष्ट करने की कोशिश की, जिसने उनपर से आए हुए धर्मविज्ञान को बाहर निकाला, जिसका विवरण उन्होंने यह देते हुए किया कि कैसे प्रत्येक भाग प्रत्येक अन्य भाग के साथ सही आकार में आ बैठता है।

137

137

ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की ओर इस प्रवृत्ति को अपेक्षाकृत स्पष्टता से अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका के ढाँचे में देखा जा सकता है। उसका सुम्मा भाग एक परिचय के साथ आरंभ होता है और इसके पश्चात् मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञान में उच्चत्तम प्राथमिकता के विषय की ओर परोक्ष में बढ़ता चला जाता है। एक परमेश्वर का विषय। इसके पश्चात् अक्विनॉस धन्य त्रिएकता की ओर बढ़ता है। इसके पश्चात्, वह सृष्टि पर ध्यान देता है, एक ऐसा अध्याय जो अभी भी परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित उसको ही सभी वस्तुओं का पहला कारक मानते हुए करता है। फिर अक्विनॉस प्राणियों के उच्चत्तम स्तर की ओर बढ़ता है: स्वर्गदूत। फिर इसके पश्चात्, वह सृष्टि के छ: दिनों पर विचार विमर्श करता है जिसमें स्वर्गदूतों से निम्न भौतिक सृष्टि का निपटारा किया गया है। इसके पश्चात् मनुष्य पर एक अध्याय है, जो कि आत्मिक और भौतिक प्राणी है। और अंत में, अक्विनॉस अपने सुम्मा के भाग एक को परमेश्वर के प्राणियों के शासन के साथ अंत करता है जिसमें वे बातें भी सम्मिलित हैं जो कि केवल भौतिक हैं। अक्विनॉस रचित सुम्मा थियोलोजिका में प्रदर्शित अरस्तू आधारित प्राथमिकताएँ विद्वतावाद की सामान्य रणनीति की विशेषता को प्रकट करती हैं। और इस मंशा ने सदियों से औपचारिक मसीही धर्मविज्ञान की विशेषता को यहाँ तक कि आधुनिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान में भी प्रकट किया है।

138

138

अब हमने उन कुछ तरीकों को देख लिया है जिनमें मसीही धर्मविज्ञान नए नियमों की पद्धतियों से आगे की ओर यूनानी तरीकों की सोच की ओर बढ़ा – पहले यह धर्माध्यक्षीय नीओ-प्लेटोवादी द्वैतवाद की ओर बढ़ा, और इसके पश्चात् मध्यकालीन अवधि में अरस्तू आधारित तर्कसंगतवाद की ओर बढ़ा – हमें अब अपने ध्यान को उन तरीकों की ओर मोड़ना चाहिए जिनमें प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की तुलना इन घटनाक्रमों के साथ की गई है।

139

139

प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान

प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान पर ध्यान देने के लिए बहुत से तरीके हैं इसलिए हमें स्वयं छोटे से नमूने तक ही सीमित करना होगा। हम प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की तीन अवस्थाओं को देखेंगे: पहला, 16वीं शताब्दी के आरंभिक धर्मसुधारकों का धर्मविज्ञान; दूसरा, शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट अंगीकरण; और तीसरा, आधुनिक प्रोटेस्टेंट विधिवत धर्मविज्ञान। आइए हम आरंभिक धर्मसुधारकों के धर्मविज्ञान से आरंभ करें।

140

140

आरंभिक धर्मसुधारक

आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान का लक्ष्य मसीही धर्मविज्ञान को पवित्रशास्त्र की विषय-वस्तु के अनुसार पुनर्निर्मित करना था। उदाहरण के लिए, मार्टिन लूथर और जॉन कॉल्विन, बड़ी गहनता के साथ धर्मविज्ञान में बाइबल के अधिकार को पुन: दृढ़तापूर्वक सामने रखने के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने रोमन कैथोलिकवाद और कट्टरपंथी अन्नाबेपटिस्ट की चुनौतियों का सामना प्राथमिक रूप से परोक्ष में पवित्रशास्त्र का उपयोग करके किया।

141

और इसके फलस्वरूप, न तो लूथर और न ही कॉल्विन ने कुछ ऐसा लिखा जो परोक्ष में आधुनिक विधिवत धर्मविज्ञान के सदृश हो। इसकी अपेक्षा यह आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान को क्रमबद्ध करने की बात, बड़े विस्तृत रूप में, लूथर के शिष्य फिल्लिप मैल्नखाथौन और कॉल्विन का अनुसरण करने वाले थियोडोर बेजा के हाथों में आ गई। परंतु फिर भी, धर्माध्यक्षीय और विद्वतावादी धर्मविज्ञान की बहुत सी विशेषताएँ आरंभिक धर्मसुधारकों के लेखों में प्रकट होती हैं।

142

उदाहरण के रूप में, कॉल्विन की प्रसिद्ध इन्स्टिट्यूट ऑफ क्रिश्चियन रिलीजन अर्थात् 'मसीही धर्म के धर्मसिद्धांत' नामक पुस्तक पर ध्यान दें। इन्स्टिट्यूट पहले स्थान पर प्रोटेस्टेंटवादियों पर झूठी शिक्षा के दोष के विरूद्ध बचाव करने के लिए लिखा गया था। परंतु प्रोटेस्टेंटवादियों के दृष्टिकोणों का बचाव करने में, कॉल्विन ने धर्मविज्ञान के निर्माण में विशेष संबंध को इस तरीके से प्रतिबिम्बित किया जो कि धर्मसुधारकों के आने से पहले शताब्दियों के मध्य विकसित हुए थे। अब, यह कहना ठीक नहीं होगा कि कॉल्विन ने केवल धर्माध्यक्षीय-कालीन और मध्यकालीन विद्वतावादी धर्मविज्ञान का ही अनुसरण किया। फिर भीफिर भी, अपने इन्स्टिट्यूट में उसने अरस्तू के तर्क के साथ विशेष संबंध को इस तरीके से प्रदर्शित किया है जिसमें उसने तकनीकी शब्दावली का उपयोग किया; अपने धर्मविज्ञान को विस्तृत रूप में तर्क-वाक्य में व्यक्त किया है; न्यायबद्धता का निर्माण विषयों के माध्यम से तर्क का उपयोग करके किया; और अपने धर्मविज्ञान को ऊपर से आए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं के नूमनों के आधार पर निर्मित किया है।

143

143

समय हमें कॉल्विन के लेख के प्रत्येक तत्व को प्रदर्शित करने की अनुमति नहीं देता, परंतु हम बड़ी आसानी से देख सकते हैं कि उसका तर्क के लिए किया हुआ समर्थन धर्मविज्ञान में एक केन्द्रीय औजार है और कैसे उसने ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं का अनुसरण किया। एक तरफ उस तरीके को सुनिए जिसमें कॉल्विन ने द्वन्द्वात्मक या तर्क के अध्ययन के लाभों की पुष्टि की है, जबकि यह अविश्वासियों के लिए विकसित किया गया था।

144

144

 पुस्तक दो के,इन्स्टिट्यूट के अध्याय दो में उसने इन निम्न शब्दों को लिखा है:

145

145

परंतु यदि प्रभु हमारी सहायता अविश्वासियों के द्वारा भौतिकी, द्वन्द्वात्मकवाद, गणित और अन्य इस जैसे विज्ञानों में किए हुए कार्यों और सेवकाई के द्वारा करने के लिए प्रसन्न है, तो हम इनका उपयोग करें, परंतु कहीं ऐसा न हो, कि परमेश्वर के द्वारा हमें स्वत: दिए हुए वरदानों के प्रस्ताव की उपेक्षा करने के कारण, हमें अपनी सुस्ती के लिए उचित सजा दी जाए।

146

146

द्वन्द्वात्मकवाद या तर्क के इस समर्थन के साथ, कॉल्विन ने न केवल इस ध्यान को अपने लेखों में प्रदर्शित किया कि पवित्रशास्त्र क्या शिक्षा देता था बल्कि इन बाइबल आधारित शिक्षाओं को इस तरह व्यक्त किया जो कि अरस्तू के तर्क के मानकों पर पूरे उतरते थे।

147

एक तरफ तो, एक बड़े पैमाने पर कॉल्विन रचित इन्स्टिट्यूट ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं को इस तरह से प्रकट करता है जो कि बड़ी निकटता से मध्यकालीन धर्मविज्ञान के ढाँचे को प्रदर्शित करता है। इन्स्टिट्यूट चार पुस्तकों में विभाजित है : पहली पुस्तक सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर के ज्ञान को दर्शाती है। इस पुस्तक में कॉल्विन ने स्वयं परमेश्वर के बारे में, और परमेश्वर प्रभुता सम्पन्न अर्थात् सर्वसत्ताधारी निर्माता और ब्रह्माण्ड को संभालने वाला है, का विवरण दिया है। पुस्तक दो का ध्यान छुटकारा देने वाले के रूप में परमेश्वर के ज्ञान को दर्शाती है; यह ज्यादात्तर परमेश्वर के इस संसार में हस्तक्षेप के साथ संबंधित पार्थिव विषयों को दर्शाती है जैसा कि मसीह ने अपने लोगों के लिए उद्धार में पूरा किया है। पुस्तक तीन अनुग्रह की प्राप्ति, और इसके लाभ और प्रभावों का विवरण देती है। यहाँ पर कॉल्विन ने यह वर्णन किया है कि कैसे उद्धार जिसे मसीह ने पूरा किया प्रत्येक व्यक्ति पर लागू होता है और कौन सी आशीषें और प्रभाव उद्धार की प्राप्ति प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में लेकर आता है। और पुस्तक चार का ध्यान इनसे निम्न, बहुत ही व्यावहारिक विषयों पर है : अर्थात् कलीसिया, इसके संस्कार, और लोक प्रशासन के साथ इसका संबंध ।

148

इस तरह से हम देख सकते हैं कि कॉल्विन उच्चस्तरीय अलौकिक से निम्नस्तरीय अवधारणाओं, जो कि किसी एक व्यक्ति के प्रतिदिन के जीवन से संबंधित हो, की ओर बढ़ा। परमेश्वर सृष्टिकर्ता के रूप में महान प्रभुता सम्पन्न अर्थात् सर्वसत्ताधारी होने के विषय का सबसे पहले निपटारा किया गया है। इसके पश्चात् दूसरे स्थान पर परमेश्वर का मसीह में होकर इतिहास में हस्तक्षेप का। इससे आगे व्यक्तिगत लोगों का उद्धार का विषय है। और फिर अंत में, हम व्यावहारिक विषय, प्रतिदिन की मसीही बातों, की ओर ध्यान केन्द्रित होते हुए पाते हैं।

149

इस तरह से, उसका तर्क और ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान के संदर्भ में समर्थन के द्वारा कॉल्विन निरंतर उन धर्मवैज्ञानिक पद्धतियों और प्राथमिकताओं का अनुसरण करता चला गया जो कलीसियाई इतिहास में धर्मसुधार के आने से पहले विकसित हुई थी।

150

इस बात की पहचान के साथ कि आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की निर्भरता धर्मविज्ञान के आरंभिक घटनाक्रमों पर निर्भर है, हमें इस बात की ओर भी संकेत करना चाहिए कि ऐसा ही कुछ प्रोटेस्टेंटवादियों के विश्वासवचनों की धरोहर के साथ भी सत्य है। संसार के विभिन्न क्षेत्रों में प्रोटेस्टेंटवादियों ने कई शास्त्रीय धर्मशिक्षा-प्रश्नोत्तरियों और विश्वासवचनों का उत्पादन किया है जो कि उनके विश्वास को सारांशित करते हैं।

151

शास्त्रीय अंगीकार

उदाहरण के लिए, विश्वास का वेस्टमिंस्टर अंगीकार जो कि लगभग 1647 के आसपास लिखा गया था पर ध्यान दें। आरंभिक प्रोटेस्टेंटवादियों के साथ यह कहना ठीक नहीं होगा कि वेस्टमिंस्टर धर्मविज्ञान दृढ़ता के साथ विद्वतावादी है, क्योंकि वह महत्वपूर्णता जो इसने पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को ऊपर दी है। परंतु, यह बात फिर भी सत्य है कि अंगीकार उन दृष्टिकोणों के द्वारा प्रभावित है जो मध्यकालीन युग के धर्मविज्ञान को दिखाते हैं। यह अंगीकार अरस्तू के तर्क को इस तरह से पालन करता है कि यह तकनीकी शब्दावलियों के लिए, कैसे तर्क-वाक्य अभिव्यक्ति का केन्द्रीय आकार हैं, किस तरह से सावधानी से की हुई तर्कसंगत न्यायबद्धता धर्मविज्ञान के प्रस्तुतीकरण के लिए आधार है, और कैसे धर्मविज्ञान के विषयों का क्रम ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं के अनुसार होना चाहिए, आदि के लिए बहुत अधिक मात्रा में इसपर निर्भर है।

152

हम विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकार में तर्क की अति महत्वपूर्ण भूमिका देख सकते हैं। यह विशेषकर अध्याय 1, के अनुच्छेद 6 में स्पष्ट पाया जाता है। सुनिए किस तरह से इस विषय को वहाँ लिखा गया है।

153

सभी बातों के लिए परमेश्वर का सारा परामर्श जो उसकी अपनी महिमा, मनुष्य के उद्धार, विश्वास और जीवन के लिए आवश्यक है, वे या तो पवित्रशास्त्र में स्पष्ट व्यक्त कर दिए गए हैं, या फिर पवित्रशास्त्र से भले और आवश्यक परिणामों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

154

154

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर की महिमा और हमारे उद्धार और विश्वास के लिए प्रत्येक आवश्यक बात दो तरीकों से पाई जा सकती है। एक तरफ तो, ये सच्चाइयाँ स्पष्ट रूप से पवित्रशास्त्र में व्यक्त कर दी गई हैं। कहने का अर्थ यह हुआ कि बाइबल कुछ निश्चित आवश्यक सच्चाइयों की स्पष्ट शिक्षा देती है। परंतु दूसरी तरफ, अन्य महत्वपूर्ण मसीही सिद्धांतों को “पवित्रशास्त्र से भले और आवश्यक परिणामों... के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।” यह कथन तर्क या बुद्धि को प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान में बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण भूमिका देता है। जब इन प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञानियों ने अपने लेखों को लिखा, तो उन्होंने तर्क और बुद्धि का उपयोग पवित्रशास्त्र के उपयोगों को पाने के लिए किया। इस तरह से, विश्वास के वेस्टमिंस्टर अंगीकार एक निश्चित प्रवृत्तियों को आरंभिक समयों की पद्धतियों की ओर प्रकट करता है।

155

इससे परे, विश्वास के अंगीकार का व्यापक आकार ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं को भी प्रकट करता है। अंगीकार इस क्रम का अनुसरण करते हैं: “पवित्रशास्त्र” शीर्षक नाम से आरंभिक अध्याय के पश्चात्, अध्याय दो और तीन का ध्यान उच्चत्तम आत्मिक वास्तविकता पर ध्यान केन्द्रित करना है – अर्थात् स्वयं परमेश्वर पर। इसके पश्चात्, अध्याय चार और पाँच सृष्टि के विषय का निपटारा करते हैं। फिर यहाँ से भी आगे प्रतिदिन के जीवन की बातें या पार्थिव विषयों की ओर बढ़ते हुए, अध्याय छ: से लेकर सत्रह मनुष्य के पाप में पतन और परिणाणस्वरूप छुटकारे के विषय को देखते हैं। इसके पश्चात्, अध्याय अठारह से इकत्तीस कलीसिया और मसीही जीवन पर बहुत अधिक व्यावहारिक विषयों का वर्णन करते हैं। अंत में, अध्याय बत्तीस और तैंतीस संसार के इतिहास के अंत को संबोधित करते हैं।

156

इस ढाँचे में जिस धर्मवैज्ञानिक प्राथमिकताओं को प्रदर्शित किया गया है वे अधिकांश प्रोटेस्टेंट शास्त्रीय अंगीकार और धर्मशिक्षा संबंधी प्रश्नोत्तरियाँ हैं।

157

आरंभिक प्रोटेस्टेंट धर्मविज्ञान की इन सामान्य प्रवृत्तियों के साथ और प्रोटेस्टेंट अंगीकार को ध्यान में रखते हुए, हम देख सकते हैं कि आधुनिक विधिवत धर्मविज्ञान निरंतर इन्हीं प्रवृत्तियों का पालन कर रहा है।

158

आधुनिक विधिवत प्रक्रियाएँ

एक उदाहरण के द्वारा, प्रिन्सटन सेमीनरी के चार्ल्स होज़ जो 1797 से लेकर 1878 तक रहे, के विधिवत धर्मविज्ञान पर ध्यान दें। अपने पूरे विधिवत धर्मविज्ञान में, होज़ ने तर्क और बुद्धि को एक केन्द्रीय भूमिका दी है जब उसने पारंपरिक तकनीकी शब्दों का उपयोग किया, तर्क-वाक्यों पर निर्भर हुआ, अपने लेखों को सावधानी से तर्कसंगत न्यायबद्धता के साथ निर्मित किया और ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं का अनुसरण किया।

159

एक तरफ तो, होज़ ने धर्मविज्ञान में तर्क की भूमिका का समर्थन किया जिस कारण यह मध्यकालीन विद्वतावादी मापदंड और आरंभिक प्रोटेस्टेंटवादियों से आगे की ओर बढ़ा। सुनिए उस तरीके को जिसमें उसने यह वर्णन किया है कि कैसे धर्मविज्ञानियों को उनकी पद्धति का अभ्यास करना चाहिए जो कि आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुरूप हों। विधिवत धर्मविज्ञान पर लिखी हुई अपनी पुस्तक के अध्याय एक, अध्याय दो, और भाग पाँच में उसने इन निम्न शब्दों को लिखा है:

160

विज्ञानवादी प्रकृति का अध्ययन करने के लिए कुछ निश्चित अनुमानों के साथ आता है।
वह अपनी अवधारणाओं के भाव की विश्वसनीयता के सही होने का अनुमान लगाता है...
उसे साथ ही अपनी मानसिक कार्य प्रणाली की विश्वसनीयता के सही होने का भी अनुमान लगाना चाहिए...
उसे उन सत्यों की निश्चितता पर भी निर्भर होना चाहिए जिसे अनुभव से नहीं सीखा जाता है...प्रत्येक प्रभाव का कोई एक कारण होना चाहिए; इसी तरह से यही कारण प्रत्येक परिस्थितियों के साथ होता है, इसी तरह के प्रभावों को उत्पन्न करेगा।

161

161

 यह वर्णन कर लेने के बाद कि कैसे प्राकृतिक विज्ञान को उसके दिनों में समझा गया था, होज़ इसके पश्चात् विधिवत धर्मविज्ञानों के लिए एक शब्द को जोड़ता है।

162

162

...जैसे विज्ञानवादी के लिए प्रकृति है वैसे ही धर्मविज्ञानियों के लिए बाइबल है। यह तथ्यों का भण्डार-गृह है; और उसकी पद्धति यह पता लगाने की है कि बाइबल क्या शिक्षा देती है, यह बिलकुल उसी तरीके का उपयोग है जिसमें प्रकृति दार्शनिक यह पता लगाते हैं कि प्रकृति क्या शिक्षा देती है।

163

163

इस तरह से हम देखते हैं कि यद्यपि होज़ ने तर्क और बुद्धि के प्रति अपनी समझ में संशोधन उसके दिनों के आधुनिक विज्ञान के अनुसार किया है, एक विधिवत धर्मवैज्ञानिक होने के नाते वह तर्क और बुद्धि के निर्माण होते हुए धर्मविज्ञान के लिए एक महत्वपूर्ण औजार के रूप में देखने की एक लम्बी परंपरा के साथ खड़ा हुआ।

164

एक तरफ तो, होज़ के विधिवत धर्मविज्ञान ने ऊपर से आए हुए धर्मविज्ञान की प्राथमिकताओं का अनुसरण किया। उसके विधिवत धर्मविज्ञान की एक झलक मसीही धर्मविज्ञान के लिए उसके सार के व्यापक ढाँचे को प्रकट करती है।

165

उसका विधिवत धर्मविज्ञान के परिचय के आरंभ के साथ भाग एक आता है जिसका शीर्षक या उचित धर्मविज्ञान दिया गया है। वहाँ पर वह स्वयं परमेश्वर के धर्मसिद्धांत का निपटारा करता है। भाग दो का शीर्षक “मानव विज्ञान” दिया गया है जो कि प्राथमिकताओं के पैमाने को नीचे की ओर मानवता के लिए ले आता है। इसके पश्चात् भाग तीन, “उद्धार का विज्ञान” परमेश्वर की उच्चत्तम अवधारणा मसीह में किए हुए कार्य के साथ आरंभ होती हुई आती है और फिर लोगों के जीवनों में उद्धार के उपयोग, और इसके पश्चात् अनुग्रह के व्यावहारिक अर्थ की ओर ले चलती है। और पारंपरिक क्रम का अनुसरण करते हुए उसने अपने धर्मविज्ञान का अंत भाग चार के साथ किया, अर्थात् “युगांतविज्ञान"।

166

इस तरह से हम देखते हैं कि प्रत्येक युग में, जबकि विश्वासयोग्य मसीही विश्वासी निरंतर पवित्रशास्त्र की अधीनता में बने रहे, उन्होंने साथ ही पवित्रशास्त्र की शिक्षाएँ ऐसे व्यक्त कीं जो कि परिवर्तित होती हुई अन्यजाति संस्कृतियों के लिए जिनमें वे रहते थे, उपयुक्त थीं।

167

अब क्योंकि हमने यह पता लगा लिया है कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान मसीही धर्मविज्ञान को व्यक्त करने के मुख्य तरीके के रूप में विकसित हुआ, हमें अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए, जो कि विधिवत धर्मविज्ञान प्रक्रिया में मूल्य और खतरों से संबंधित है। भविष्य के अध्यायों में हम इन विषयों को अधिक विस्तार से देखेंगे। परंतु, इस समय, हम स्वयं को केवल कुछ ही व्यापक बातों तक सीमित रखेंगे।

168

मूल्य और खतरे

विधिवत प्रक्रिया के कुछ सकारात्मक और नकारात्मक गुणों को देखने के लिए, हमें स्मरण रखना चाहिए कि कैसे हमने अन्य अध्यायों में धर्मविज्ञान के निर्माण का वर्णन किया है। आपको स्मरण होगा कि कैसे हमने इस सच्चाई के बारे में बोला था कि परमेश्वर ने तीन मुख्य स्रोतों को प्रदान किया जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए जब हम मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करते हैं : पवित्रशास्त्र की व्यख्या, समुदाय में परस्पर व्यवहार और मसीही जीवन। पवित्रशास्त्र की व्याख्या में विशेष प्रकाशन पर ध्यान देना हमारा तरीका है और अन्य दो स्रोत ज्यादात्तर परमेश्वर के सभी बातों में दिए हुए सामान्य प्रकाशन पर ध्यान देते हैं। समुदाय में परस्पर व्यवहार हमें सामान्य प्रकाशन: अर्थात् अन्य लोगों की साक्षी, विशेषकर जो मसीही हैं, तक पहुँचने के लिए एक महत्वपूर्ण आयाम प्रदान करता है। और मसीही जीवन सामान्य प्रकाशन के अन्य महत्वपूर्ण आयामों पर हमारे ध्यान को आकर्षित करता है– वे बातें जिन्हें हम मसीह में अपने जीवन जीने, पाप के साथ संघर्ष करने और आत्मा में चलने के द्वारा अनुभवों से सीखते हैं। ये तीन धर्मवैज्ञानिक स्रोत वे साधारण तरीके हैं जिसमें पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन उसके प्रकाशन को समझने और मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करने के लिए करता है।

169

आपको यह भी स्मरण होगा कि ये मुख्य धर्मवैज्ञानिक स्रोत हमारी सहायता हमारे विश्वास के उन स्तरों की जाँच करने में करते हैं जो हमारी विशेष मान्यताओं के लिए होना चाहिए। व्याख्याओं, समुदाय में परस्पर व्यवहार और मसीही जीवन की साक्षी किसी एक विशेष विषय पर सामंजस्यपूर्ण और प्रबल हैं, फलस्वरूप उस विषय के बारे में हमारी दृढ़ता का स्तर और भरोसा सामान्य रूप से बढ़ते चले जाना चाहिए। परंतु, जब ये विषय सामंजस्यहीन और कम प्रबल होते तो हमारी दृढ़ता और भरोसे के स्तरों को सामान्य रूप से दिए गए विषय पर कम होना चाहिए। क्योंकि व्याख्या, सामुदायिक सहभागिता और मसीही जीवन मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिकाओं को अदा करता है, हम विधिवत धर्मविज्ञान के मूल्य और खतरों की कुछ विशिष्ट जाँच यह पूछते हुए कर सकते हैं कि कैसे विधिवत धर्मवैज्ञानिक इनमें से प्रत्येक स्रोत को सम्मिलित करते हैं। कैसे विधिवत धर्मविज्ञान परमेश्वर प्रदत इन तीन स्रोतों के उपयोग के लिए हमारी क्षमता को सक्षम बनाती या इसके प्रति रूकावट उत्पन्न करती है?

170

हम सबसे पहले विधिवत प्रक्रिया का मसीही जीवन के, दूसरा, हम विधिवत प्रक्रिया और समुदाय में परस्पर व्यवहार या सहभागिता के; और तीसरा विधिवत प्रक्रिया और व्याख्याके संबंध पर चर्चा करेंगे। आइए सर्वप्रथम हम यह देखें कि कैसे विधिवत प्रक्रिया के पास मसीही जीवन के लिए दोनों सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं।

171

मसीही जीवन

मसीही जीवन का विवरण कई विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है और हम आने वाले भविष्य के अध्यायों में खोज करेंगे कि यह कैसे कार्य करता है। इस समय, हम मसीही जीवन के स्रोत पर एक संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करेंगे। हमारे अध्ययन में, हम मसीही जीवन पर बात करेंगे कि इसमें हमारा पवित्रीकरण, पवित्रता में हमारा विकास, तीन परस्पर-संबंधित क्षेत्रों में सम्मिलित है। हमें एक वैचारिक स्तर पर, एक व्यावहारिक स्तर पर और एक भावनात्मक स्तर पर पवित्रीकृत होने की आवश्कता है। दूसरे शब्दों में, हमारे विचार परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करें। हमारे कार्य परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करें। और हमारी भावनाएँ भी परमेश्वर की इच्छा की पुष्टि करें। हमने मसीही जीवन के इन तीनों आयामों को शास्त्र-सम्मत या प्रामाणिक, शास्त्रीय-आचरण और शास्त्रीय-करूणा के रूप में बात की है।

172

कई ऐसे महत्वपूर्ण तरीके हैं जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान मसीही जीवन के इन तीन आयामों के प्रति हमारी क्षमता के लाभ की या तो वृद्धि करता या फिर रूकावट बनता है। आइए सर्वप्रथम हम अधिक सकारात्मक पक्ष को देखें, कि कैसे विधिवत प्रक्रिया धर्मविज्ञान के लिए एक स्रोत के रूप में मसीही जीवन में वृद्धि करता है।

173

वृद्धि

सकारात्मक पक्ष की ओर, विधिवत धर्मविज्ञान अपनी धार्मिक निष्ठा के क्षेत्र में दृढ़ है। यह विधिवत प्रक्रिया को सोचने का एक तरीका है, जो उन विषयों को उचित रूप से ध्यान देने के लिए एक वैचारिक ढाँचा उपलब्ध कराता है जिनका हम हमारे प्रतिदिन के जीवन में सामना करते हैं। जब हम दिन प्रतिदिन मसीह के साथ जीवन जीने का प्रयास करते हैं, तो हम अक्सर ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं जहाँ पर हमें परमेश्वर, हमारे स्वयं के विषय और हमारे चारों ओर के संसार के प्रति एक स्थाई, तार्किक रूप से सुसंगत, चिरस्थाई दृष्टिकोण को अपनाने की योग्यता की आवश्यकता होती है। विधिवत धर्मविज्ञान कई महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है जिसमें हम इस तरह के दृष्टिकोणों को प्राप्त कर सकते हैं। जब हमारे पास केवल असम्बद्ध मान्यताएँ होती हैं, तो हम अपनी परिस्थितियों का आकलन करने, हमारे जीवनों के बारे में प्रश्नों का उत्तर देने, या ऐसे निर्णय लेने के लिए सही रूप से तैयार नहीं होते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हों।

174

मुझे स्मरण है एक बार मैं अपने एक मित्र से मुलाकात करने के लिए अस्पताल गया था। वह बहुत ज्यादा बीमार था और उसको बहुत ज्यादा प्रार्थना की आवश्यकता थी। परंतु जब मैंने उससे पूछा कि क्या वह परमेश्वर से सहायता के लिए प्रार्थना कर रहा था, तो उसने उत्तर दिया कि, “नहीं।” मैं उसके उत्तर से अचम्भित रह गया और उससे इसका कारण पूछा। उसने मुझसे इस तरह से कहा कि, “मैं परमेश्वर की प्रभुता में विश्वास करता हूँ। इसलिए, मैं जानता हूँ कि प्रार्थना करना कोई भिन्नता नहीं ला सकता।”

175

मेरे मित्र के साथ क्या हो गया था? ठीक है, कई तरह से उसने मसीही धर्मविज्ञान को थोड़ा बहुत आत्मसात् कर लिया था परंतु उसने इसे ही पूरी मसीही शिक्षा मान लिया था। उसने यह तो ठीक समझ लिया था कि परमेश्वर पूरे इतिहास को अपने नियन्त्रण में रखे हुए है; यह कि वह पूरी तरह से प्रभुता सम्पन्न है। परंतु मेरा मित्र यह नहीं जानता था कि इस तथ्य को मसीही विश्वास के अन्य सत्यों के साथ कैसे संबंधित किया जाए, जैसे कि प्रार्थना के माध्यम का उपयोग करना, वे तरीके जिनमें परमेश्वर प्रार्थना को उसके प्रभुता वाले प्रयोजनों को पूरा करने के लिए उपयोग करता है।

176

परमेश्वर की प्रभुता प्रार्थना की आवश्यकता को कम नहीं कर देती, यह तो वास्तव में प्रार्थना के लिए तर्कसंगत आधार है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर प्रभुता सम्पन्न है कि जब हम प्रार्थना करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर सब कुछ को अपने नियन्त्रण में रखता है जब हम उसकी ओर सहायता के लिए मुड़ते हैं। यदि परमेश्वर सब कुछ नियन्त्रण में नहीं रखता, तो हम किसी और की ओर सहायता के लिए मुड़ जाते। यदि मेरा मित्र इन बातों को समझ गया होता, तो वह विधिवत धर्मविज्ञान में अच्छी तरह से प्रशिक्षित हो जाता, यदि वह परमेश्वर की प्रभुता और प्रार्थना के मध्य के संबंध को समझ जाता तो वह अपने मसीही जीवन के थकावटी अनुभव के मध्य इसे यापन करने के लिए और भी अधिक उत्तम तरीके से सुसज्जित हो जाता।

177

इसी के साथ, यदि शास्त्र-सम्मतता के लिए विधिवत धर्मविज्ञान सकारात्मक हो सकता है, तो जब हम इससे बहुत ज्यादा अपेक्षा करते हैं, तब यह मसीही जीवन में रूकावट भी उत्पन्न कर सकता है ।

178

रूकावट

विधिवत धर्मविज्ञान हमारे ध्यान को मसीही विश्वास के प्रति सावधानीपूर्ण तरीके से तर्कसंगत आत्मबोध की ओर ले चलता है और यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। परंतु हम अपनी मान्यताओं को एक तार्किक पद्धति में रखने के द्वारा इतना ज्यादा ध्यानमग्न हो जाते हैं कि हम मसीही जीवन के अन्य आयामों को ही अनदेखा कर देते हैं, विशेषकर शास्त्रीय-आचरण को, अर्थात् अपने व्यवहारों को परमेश्वर की इच्छा के साथ पुष्टि करना, और शास्त्रीय-करूणा को, अर्थात् अपनी भावनाओं को परमेश्वर की इच्छा के साथ पुष्टि करना।

179

उदाहरण के लिए, मसीही विश्वासी जो कि बहुत ज्यादा विधिवत प्रक्रिया में सम्मिलित हैं अक्सर अपने ध्यान को मसीही विश्वास के व्यवहार और भावनाओं के लिए कम कर देते हैं। वे आराधना, अनुग्रह के माध्यमों में सम्मिलित होना, अन्यों के प्रति सेवकाई और पवित्र आत्मा का अंतर्बोध और भावनात्मक मार्गदर्शन जैसी बातों को अधिकारहीन कर देते हैं। वे मसीही जीवन को वैचारिक विषयों, शास्त्र-सम्मत होने तक सीमित कर देते हैं और मसीही जीवन के अधिक व्यावहारिक और व्यक्तिगत आयामों को हटा देते हैं। तर्कसंगत विधिवत धर्मविज्ञान महत्वपूर्ण है, परंतु हमारा विश्वास मात्र सिद्धांतों की एक पद्धति ही नहीं है। यह एक व्यावहारिक विश्वास है जिसे अभ्यास में लाया जाना चाहिए और एक व्यक्तिगत संबंध है जिसे सींचा जाना चाहिए।

180

मैं आपको नहीं बता सकता कि कितनी बार मैंने इस समस्या का सामना धर्मवैज्ञानिक विद्यार्थियों के जीवनों में किया है। मुझे स्मरण है कि एक विद्यार्थी जिसने बहुत सी कलीसियाओं से पास्टर बनने के लिए दूरभाष से निवेदनों को पाया था। वह बहुत ज्यादा हताश इसलिए था क्योंकि वह नहीं जानता था कि किस तरह से एक निर्णय को लेना है। उसने मुझ से कहा कि, “मैंने विधिवत धर्मविज्ञान को बहुत ज्यादा पढ़ा है। परंतु यह निर्णयों में एक सबसे महत्वपूर्ण व्यावहारिक विषय में मेरी कोई सहायता नहीं कर रहा है जो कि मुझे अपने पूरे जीवन भर सामना करना होगा।”

181

इसलिए मैंने उससे पूछा, “आप कैसा अनुभव करते हैं कि पवित्रआत्मा आपका मार्गदर्शन कर रहा है? क्या आपने इस निर्णय के लिए उपवास सहित प्रार्थना में समय व्यतीत किया है?"
मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए? उसने उत्तर दिया। मैं इस विषय को तार्किक और विधिवत तरीके से हल कर लेना चाहता हूँ।”

182

182

ठीक है, जो मसीही विश्वासी विधिवत धर्मविज्ञान के लक्ष्यों को बहुत अधिक उत्साह के साथ थामते हैं वे अक्सर पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत सेवकाई और विश्वास को व्यवहार में लाए जाने का अनदेखा करते हैं। और यह गंभीरता के साथ उसके फलदाई मसीही जीवन में रूकावट उत्पन्न कर सकता है।

183

मसीही जीवन जीने के लिए हमारी क्षमता में वृद्धि और कमी उत्पन्न करने के अतिरिक्त, विधिवत प्रक्रियाओं को सामुदायिक सहभागिता में भी बहुत सारे सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं। हमारे भविष्य के अध्यायों में हम और अधिक सावधानी से सामुदायिक सहभागिता पर ध्यान देंगे, परंतु अभी के लिए हम केवल इस धर्मवैज्ञानिक स्रोत की मुख्य गतिशीलताओं का ही उल्लेख करेंगे।

184

समुदाय में सहभागिता

तीन बातों के सम्मिलित होने के कारण समुदाय में सहभागिता के बारे में सोचना सहायता प्रदान करता है : हमारी मसीही धरोहर, जो कि अतीत में पवित्र आत्मा का कार्य क्षेत्र है, हमारा वर्तमान समुदाय, जो कि हमारे समकालीन समुदाय में पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का क्षेत्र है, और हमारे व्यक्तिगत निर्णय, जो कि पवित्र आत्मा का हम में से प्रत्येक के जीवन में व्यक्तिगत रूप से समुदाय के भीतर कार्य करना है। मसीही विश्वासी एक दूसरे के साथ सहभागिता करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि कलीसिया वह केन्द्रीय क्षेत्र है जिसके भीतर पवित्र आत्मा इस संसार में सेवकाई कर रहा है। और मसीह हमसे अपेक्षा करता है कि हम अपने धर्मविज्ञान को अन्यों के साथ संगति करके निर्मित करें जो कि पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं।

185

सहभागिता के इन तीन क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए : धरोहर, वर्तमान समुदाय और व्यक्तिगत निर्णय, हमें यह देखने में सहायता करेंगे कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि करता या रूकावट बनता है।

186

वृद्धि

एक तरफ तो, समुदाय के लिए विधिवत धर्मविज्ञान के सर्वोत्तम मूल्यों में से एक वह तरीका है जो हमें मसीही धरोहर के लिए सक्षम बनाता है, कि कैसे मसीही विश्वासियों ने अतीत में अपने विश्वास को समझा और उसके अनुसार जीवन जीया। विधिवत प्रक्रियाएं धर्मविज्ञान का निर्माण उस दृष्टि से करती हैं जिसमें पवित्र आत्मा ने शिक्षाओं को पहले ही मसीह की कलीसिया को, यह ध्यान देते हुए शिक्षित किया है कि कैसे अतीत में महान पुरूषों और स्त्रियों ने धर्मविज्ञान को निर्मित किया था। और इसी कारण से, यह अतीत के मसीही समुदाय के साथ हमारी सहभागिता की क्षमता की बहुत ज्यादा वृद्धि कर सकती है।

187

हमारे आज के दिनों में, अधिकांश मसीही विश्वासी धर्मविज्ञान को ऐसे देखते हैं जैसे कि यह बहुत ही व्यक्तिगत हो। ऐसा आभास होता है कि अधिकांश मसीही विश्वासियों का सर्वोच्च धर्मवैज्ञानिक लक्ष्य एक ऐसे धर्मविज्ञान का निर्माण करना है जो कि स्वयं पर ही आधारित हो और इस बात का कोई महत्व नहीं कि दूसरे क्या विशवास करते हैं। मसीह हमें धर्मविज्ञान के लिए हमारे दृष्टिकोण में वास्तविकता के लिए बुलाहट इस अर्थ में देता है कि इसे प्रामाणिक होना चाहिए, और वह हमसे चाहता है कि हम इसमें अपने संपूर्ण हृदय के साथ सम्मिलित हों। परंतु धर्मविज्ञान तक केवल व्यक्तिगत विषय के रूप में पहुँचना हमें उन सर्वोत्तम स्रोतों से खाली हाथ कर देता है जो परमेश्वर ने हमें धर्मविज्ञान के लिए दिए हैं: अर्थात् पवित्र आत्मा का अभी तक के युगों में किया हुआ कार्य।

188

अब, जब विश्वासी आज कभी-कभी अन्यों के साथ सहभागिता करते हैं तो यह सामान्य रूप से वर्तमान समुदाय के स्तर पर होता है। हम पुस्तकों को पढ़ते हैं और हमारे समकालीन लोगों के द्वारा दिए सन्देशों और व्याख्यानों को सुनते हैं। फिर भी, विधिवत धर्मविज्ञान, हमारे ध्यान को उन अद्भुत तरीकों की ओर मोड़ने हमारी सहायता करता है जिनमें पवित्र आत्मा ने अतीत में कलीसिया का मार्गदर्शन किया।

189

जबकि यह सत्य है कि विधिवत प्रक्रिया हमारी सहभागिता को समुदाय में इस तरीके के साथ वृद्धि करती है, उसी समय, विधिवत धर्मविज्ञान उन तरीकों में भी सीमित है जिनमें ये हमारे लिए सहभागिता को खोलते हैं।

190

रूकावट

जब हम विधिवत धर्मविज्ञान के पारंपरिक ध्यान को, इस बात का अनदेखा करते हुए बहुत अधिक मात्रा में ले लेते हैं, कि पवित्र आत्मा वर्तमान समुदाय को क्या शिक्षा देता है और वह आज कैसे हमारे व्यक्तिगत निर्णयों को सूचित करता है, तो यह अप्रासंगकिता की ओर ले जा सकता है। चाहे अतीत का धर्मविज्ञान कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न रहे, कलीसिया आज नई चुनौतियों का सामना कर रही है और पवित्र आत्मा अभी भी कलीसिया को शिक्षा दे रहा है कि वह कैसे इन चुनौतियों का सामना कर सकती है।

191

मैं एक मित्र से कलीसिया में रविवार की सुबह की हुई एक मुलाकात को स्मरण कर सकता हूँ। वह शहर के दूसरे भाग में अन्य कलीसिया का सदस्य था, परंतु वह उस दिन हमारी कलीसिया में आराधना के लिए आया हुआ था। इसलिए, मैंने उससे पूछा, “आज आप यहाँ कैसे? क्या आप उस कलीसिया से संबंधित नहीं हो?"

192

उसकी प्रतिक्रिया ने स्पष्ट कर दिया। उसने कहा, “मैं उस कलीसिया को प्रेम करता था क्योंकि वहाँ का पास्टर विधिवत धर्मविज्ञान की शिक्षा देता था। मैंने बहुत कुछ सीखा है कि मसीही विश्वासियों को विश्वास के लिए क्या उपयोग करना चाहिए, परंतु अब और ज्यादा मैं उस कलीसिया में नहीं रह सकता, मैं बहुत ज्यादा यह अनुभव करता हूँ कि मानो मैं आज के जीवन से संपर्क ही खोता जा रहा हूँ।”

193

इस तरह की समस्या जो अक्सर उस समय उठ खड़ी होती है जब मसीही विश्वासी विधिवत धर्मविज्ञान के लिए बहुत ज्यादा उत्साहित हो जाते हैं। वे धरोहर को इतना ज्यादा ध्यान दे देते हैं कि वे यह नहीं जानते कि कैसे समकालीन विषयों को संबोधित किया जाता है। विधिवत धर्मविज्ञान अक्सर हमें वर्तमान के समुदाय और व्यक्तिगत निर्णय की ओर ध्यान अदा करने में रूकावट उत्पन्न करता है।

194

चाहे यह कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान हमें मसीही जीवन और सामुदायिक सहभागिता के लिए सुसज्जित करता है, इसका विशेष प्रभाव पवित्रशास्त्र के हमारी व्याख्या पर भी पड़ता है।

195

पवित्रशास्त्र की व्याख्या

हम भविष्य के अध्यायों में, व्याख्याओं पर और ज्यादा ध्यान से देखेंगे, परंतु अभी के लिए हम उन मुख्य तरीकों की ओर संकेत देंगे जिनमें पवित्र आत्मा ने कलीसिया को बाइबल की व्याख्या करने की शिक्षा दी। इन्हें तीन मूलभूत श्रेणियों में सारांशित करना ज्यादा सहायतापूर्ण होगा साहित्यिक विश्लेषण, ऐतिहासिक विश्लेषण और विषयात्मक विश्लेषण। इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण विशेष योगदान देता है, परंतु प्रत्येक एक दूसरे पर निर्भर है। इसलिए, जब हम व्याख्याओं के लिए विधिवत धर्मविज्ञान की सीमाओं और मूल्यों का आकलन करते हैं, हमें इस बात को स्पर्श करना चाहिए कि यह कैसे पवित्रशास्त्र की व्याख्या में इन दृष्टिकोणों के साथ संबंधित होता है।

196

196

साहित्यिक विश्लेषण। साहित्यिक विश्लेषण व्याख्याओं का वह दृष्टिकोण है जो बाइबल को प्राथमिक रूप से ऐसा देखता है जैसे कि वह एक चित्र, या छायाप्रति हो; हम इसे कला के साहित्यिक कार्य के रूप में देखते हैं। इस तरह की व्याख्याहाल के दशकों में ज्यादा मात्रा में प्रचलित हुए हैं।

197

विस्तृत रूप से कहें तो साहित्यिक विश्लेषण बाइबल को ऐसे समझने का प्रयास करता है कि जैसे यह एक मानवीय लेखकों के द्वारा रूपरेखित दस्तावेज है जो उन्होंने उनके श्रोताओं के लिए परंपरागत साहित्यिक तरीकों के प्रभाव में लिखा है। साहित्यिक विश्लेषण में बहुत ज्यादा ध्यान इस तरह के प्रश्नों को दिया जाता है: “मानवीय लेखकों के क्या उद्देश्य थे?” “कैसे एक अनुच्छेद के साहित्यिक गुण लेखक के सन्देश को संप्रेषित करते हैं?” और “कैसे पवित्रशास्त्र को उनके मूल श्रोताओं को प्रभावित करना चाहिए था?"

198

ऐतिहासिक विश्लेषण। ऐतिहासिक विश्लेषण बाइबल के प्रति एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे आधुनिक काल में, नवजागरण काल के आरंभ से और केवल अभी हाल ही के दशकों के साथ अंत होते हुए विवरण दिया गया है। इस अवधि के मध्य, उस इतिहास को समझना जिसका संकेत बाइबल आधारित व्याख्याओं के लिए केन्द्रीय उद्देश्य बना रहा।

199

ऐतिहासिक विश्लेषण के दृष्टिकोणों में बाइबल को एक बहुत ज्यादा साहित्यिक चित्र या प्रतिछाया के रूप में नहीं, बल्कि इतिहास में झांकने की खिड़की के रूप में समझा जाता है। अब, शुद्ध ऐतिहासिक विश्लेषण अन्य दृष्टिकोणों को अनदेखा नहीं करता है, बल्कि इसका प्राथमिक उद्देश्य पवित्रशास्त्र में से देखते हुए इतिहास के बारे में शिक्षा प्राप्त करना है जो कि मूलपाठ के पृष्ठभूमि में पड़ा हुआ है।

200

ऐतिहासिक विश्लेषण के कुछ निश्चित रूपों में, मसीही विश्वासी इन जैसे व्याख्या के प्रश्नों को पूछते हैं: “परमेश्वर के कौन से कार्यों का उल्लेख पवित्रशास्त्र में किया गया है?” “उनकी पुरातन विशेषताएँ कौन सी थीं?” “परमेश्वर का कौन सा कार्य परमेश्वर के पहले और पश्चात् के कार्यों के साथ संबंधित है?” कुल मिलाकर, ऐतिहासिक विश्लेषण का प्राथमिक उद्देश्य इस बात का पुनर्निर्माण है कि बाइबल आधारित इतिहास में क्या कुछ घटित हुआ और उन घटनाओं की विशेषताओं को उनके समयों में रहने वाले लोगों के लिए समझना।

201

विषयात्मक विश्लेषण। एक तीसरी रणनीति जिसे कलीसिया ने व्याख्याओं के लिए लिया उसे “विषयात्मक विश्लेषण” कह कर पुकारा जा सकता है। विषयात्मक विश्लेषण कई तरीकों में से एक ऐसा तरीका है जिसमें मसीही विश्वासियों ने बाइबल से धर्मविज्ञान को पाया है, परंतु विषयात्मक विश्लेषण पर कलीसिया की आरंभिक सदियों में मध्यकालीन अवधि के मध्य ऐतिहासिक विश्लेषण की ओर परिवर्तन होने से पहले अधिक दृढ़ता के साथ जोर दिया गया था।

202

विषयात्मक विश्लेषण में हम पवित्रशास्त्र को एक साहित्यिक छायाप्रति, या इतिहास में झांकने के लिए खिड़की के रूप में नहीं देखते हैं, बल्कि एक दर्पण की तरह, प्रश्नों, विषयों या प्रसंगों को संबोधित करने के लिए करते हैं जो कि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं, यद्यपि वे स्वयं बाइबल में अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। हम इस तरह के प्रश्नों को पूछते हैं जैसे, “बाइबल हमारे हितों के बारे में क्या कहती है?” “कैसे हम हमारी आवश्यकताओं की प्राप्ति कर सकते हैं?” “यह उन विषयों के बारे में क्या कहती है जिनका हमारे लिए मूल्य है?” ये विषय व्यक्तिगत बातों से आ सकते हैं; ये हमारी चारों की ओर की संस्कृति के द्वारा उठाए जाने वाले विषयों से आ सकते हैं, या यह हो सकता है कि हमारे कलीसियाई समुदाय से आ जाए। चाहे कुछ भी क्यों न हो, विश्वासयोग्य मसीही विश्वासियों ने सदैव यह जानना चाहा है कि पवित्रशास्त्र उन विषयों या प्रश्नों के बारे में क्या सीखता है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं।

203

इन तीन व्याख्या रणनीतियों को ध्यान में रखते हुए, हम अब ऐसी स्थिति में पहुँच गए हैं जहाँ हम यह देख सकते हैं कि कैसे विधिवत प्रक्रियायें व्याख्याओं अर्थात् शास्त्रीए टीका में वृद्धि करती और रूकावट बनती हैं।

204

वृद्धि

पहला, विधिवत धर्मविज्ञान विषयात्मक विश्लेषणों की वृद्धि करने के लिए बड़ी अच्छी तरह से सुसज्जित है। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने हमें पूछने के लिए, एक सुव्यवस्थित विषयों की सूची के पारंपरिक प्रश्नों को दिया है।

205

विधिवत धर्मविज्ञान विषयात्मक विश्लेषणों के लिए एक बहुत ही सहायतापूर्ण आकार को प्रदान करता है। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने यह खोज की है कि पूरी बाइबल पारंपरिक धर्मवैज्ञानिक विषयों के बारे में क्या कहती है। उन्होंने पूरी बाइबल से पदों को मिलाकर देखा है और जब उन्होंने इनको पारंपरिक विषयों के साथ संबंधित किया तब इन पदों के मध्य में परस्पर-संबंध को रेखांकित किया है। विभिन्न पदों को आपस में मिलाने और संयोजित करके एक पूरा समूह बनाने की यह प्रक्रिया उस एक बात को करने से हमें बचाता है जिसे पवित्रशास्त्र एक विषय के बारे में कहता है जबकि बाकी अन्य उस विषय पर कुछ और ही कहते हैं। हम यह जानना चाहते हैं कि परमेश्वर के बारे में एक पद क्या कहता है और बाकी का पवित्रशास्त्र परमेश्वर के बारे में क्या कहता है। वे सारे मनुष्यजाति के बारे में क्या कहते हैं? वे सारे उद्धार के बारे में क्या कहते हैं? विधिवत बहुत अधिक मूल्य का है क्योंकि यह बाइबल आधारित दृष्टिकोणों के इन या कई अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर हमें सहायता प्रदान करता है।

206

रूकावट

एक तरफ तो, विधिवत धर्मविज्ञान अक्सर व्याख्याओं में रूकावट बनता है क्योंकि यह पवित्रशास्त्र के साहित्यिक और ऐतिहासिक विश्लेषणों पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि, विधिवत धर्मविज्ञानी जो बाइबल के अच्छे व्याख्याकार हैं सदैव बाइबल को एक साहित्य के रूप में और इतिहास को कुछ सीमा तक देखते हैं। फिर भी यह वह मुख्य तरीका नहीं जिसमें वे पवित्रशास्त्र तक पहुँचते हैं। इसी कारण से, जब विधिवत धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी व्याख्या के हमारे दृष्टिकोण पर हावी होता है, यह उन बातों पर सीमाओं को निर्धारित करता है जिन्हें हम बाइबल में से प्राप्त करते हैं। और जैसा कि हम भविष्य के अध्यायों में देखेंगे, साहित्यिक और ऐतिहासिक विश्लेषण की खोज अक्सर हमें विधिवत धर्मविज्ञान के सारांशों के साथ समायोजन करने के लिए बाध्य करती है।

207

इस तरह से हम सामान्य अर्थों में देखते हैं कि, विधिवत धर्मविज्ञान के मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण में दोनों अर्थात् मूल्य और खतरे हैं। यह मसीही जीवन, समुदाय में सहभागिता और कुछ उल्लेखनीय सकारात्मक तरीकों में व्याख्याओं के लिए योगदान देता है। परंतु साथ ही यह हमारे ध्यान को प्रत्येक धर्मवैज्ञानिक स्रोतों के महत्वपूर्ण आयामों से दूर कर देता है। यह महत्वपूर्ण है कि हम विधिवत धर्मविज्ञान में दोनों अर्थात् मूल्यों और खतरों को अपने ध्यान में रखते हैं।

208

उपसंहार

इस अध्याय में हमने “विधिवत धर्मविज्ञान क्या है” प्रश्न की खोज की है। हमने देखा कि कैसे विधिवत धर्मविज्ञान की तुलना नए नियम से की जाती है। हमने देखा कि कैसे यह कलीसिया के इतिहास के द्वारा विकसित हुआ। और हमने विधिवत धर्मविज्ञान के कुछ मूल्यों और खतरों को भी देखा।

209

यह सीखते हुए कि कैसे हमारी मान्यताओं को एक विधिवत धर्मविज्ञान का निर्माण करना एक ऐसी बात है जिसे मसीह के अनुयायी होने के नाते सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक को हम क्रियान्वित कर सकते हैं। पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को लेते हुए और उन्हें तर्कसंगत रूप से विधिवत प्रक्रिया में कलीसिया के लंबे समय से चली आ रही परंपराओं के अनुसार व्यवस्थित करना हमें एक पूर्ण मसीही धर्मविज्ञान को निर्मित करने के लिए सक्षम करेगा जो कि परमेश्वर को सम्मान देगा और हमें मसीह की कलीसिया के सेवकों के रूप में और भी अधिक प्रभावशाली होने के योग्य बनाएगा।

210